



کرمی لیلی

فصل
کاشانی





کرشن لیلیا



جملہ حقوق بحق مصنف محفوظ

- ۱۔ ٹائٹل
- ۲۔ صفحہ
- ۳۔ عکس
- ۴۔ کاتب
- ۵۔ آرٹ تہ حاشیہ
- کمرشن لپا
- ۱۹۲
- جنوری ۱۹۸۳ء
- مصنف
- (")

۷۔ مول (شیٹھ روپیہ) -/60 Rs.

۸۔ چھاپ خانہ :-

کھانا-لیلا

پرنٹر اینڈ پبلشر :-

فاضل کاشمیری

ساکنہ گلشن نگہ - چھاپورہ - سرنگ

کشمیر ۱۵-۱۹

سورگیہ شرمیتی مایا ونتی بتر
 کی سمرتی میں سمریت
 (مُصَنَّف)

स्वर्गीया
 श्रीमती मायावंती बतरा
 की
 पुण्य स्मृति में
 समर्पित

फाजिल कश्मीरो



بنووم پان موهلی سوز پورمس
میترو اوس ته انگ انگ ساز کورمس
ووزس یس نش چیمیلته ژهنوس کدورت
نکته زنگاره نوژک سپه پورمس

شریذگیت اچی کس قسم کے فوق البشر انسان (Superman) پیدا کرنا چاہتی ہے۔

۵۶۔ جو سب سے مسکھی ہو نہ دھوئے دھوی۔ نہ خوف اس کو آئے نہ غصہ بھی۔ نہ جد کوں کے

नाभिपतति न इति तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥७॥ इहेव तैजसः



नूरुक् आयि

वनोवुम पान मोरली सोज् बोरमस
मेच्युव ओसुस त अंग अग साज् कोरमस
वोजुस यस निश छलिष छ'न्यमस कदूरथ
तुलिथ जंगार' नूरुक् आयि पोरमस

नोट : नूरुक् आयि :— (सूरै नूरुक् आयि,

सूरै नूर छु कुरानिमजोदुक मस सूरै शरीफ)

स ब्रह्मयोगयुक्तोत्मा

खमक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विगमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभं

حرفِ اول

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب
 کرشن لیبلا میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور
 شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شامل حال
 رہی جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی تزئین
 (Decorations) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیبلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ
 ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسر چمن لال جی سپرو اور پرنٹ
 سائل کا شیمری صاحبہ نے تعاون دیا، اور گنیش مندر پر بندھاکا
 سمتی سرنگر اور سنا تن دھرم پرتاپ بھاسرنگر نے مالی امداد
 دی۔ میں نے رسالہ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے
 کافی قایده اٹھایا، میں ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے ان کی چند خامیوں

* दो शब्द *

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब “कृष्ण लीला” मेरो तीसरो अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-शान तामीर करने में मुझे ईश्वर-अल्लाह की हमांगीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Decoration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है ।

जेर-इ नज़र किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण-भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामो इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल “साइल-कश्मीरी” और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें “कल्याण” गोरखपुर का नायाब खसूसी “भागतङ्क”, और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं ।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा

کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی
 طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا، اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اولیٰ
 سال اسلامیہ سکولوں میں گزرا۔ اے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی
 کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی
 کا نقشہ اُتار رہے۔ اس لئے میری کرشن لیلیاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر
 کی جھلکیاں ابھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہو گا کہ لکھوتی سہا سے
 فراق گورکھپوری کے کلام میں جا بجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو پہلو
 ہندی بھاشا کی کرشن جھلملاتی ہیں جو ایک فطری امر کا سہیلہ دار ہے۔
 دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت
 میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ
 نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری کرشن لیلیا پڑھ کر یہاں کہ
 یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لیلیا کار فائنل کی شاعری اور خیالات و بیانات کا

करने में कोई भिन्नक मझूस नहीं होती - मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबिबत के दस अबायली साल इस्बामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अरबी के माहिरीन असातिजा उल्माए वक्त से जबान-ब-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जवाहर को भल्लकियां उभरती हैं । यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख-पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीब के पहलू-ब-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है । दूसरी बात इस हकीकत की निशानदिहो है कि “नात” कहना मेरी सिरिश्त में शामिल है — इस लिए रंग और कंफ-व-गुदाज से भी अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी “कृष्ण-लीला” पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीला-कार फाजिल की शायरी और खयालात और बयानात का Convas बहुत बसीह है या वह तख-

کنواس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیل کے ایک حلقہ سے نکل کر دوسرے حلقہ میں پڑنے میں کچھ تامل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشق رسولؐ ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گورد بھگت بھی ہے۔ کیونکہ فاضل نے سنگور و سری یا گور و نانک دیو جی پر بھی اپنی کسی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں، یا یہ کہ وہ مسلمان ہونے کے ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟۔۔۔۔۔

کچھ بھی نہیں۔۔۔ ہاں! اتنا کہوں گا کہ لوگ مجھے شاعر کہتے ہیں۔

یہاں چند عالمیوں کے سوال کا جواب دینے میں مجھے تامل نہیں کہ میں نے اپنی عمر کے گرانقدر اور مصروف ترین مہم و سال کرشن لیلہ تصنیف اور مرتب کرنے میں اس لئے صرف کئے کہ سری گیتاجی کے مندرجہ پینچامات اور خاص طور پر اس مقدس سلوک کا

نوٹ:-

۱۔ عامی:- ناخواندہ

۲۔ تامل = اندیشہ

۳۔ مقدس = پاک

ययुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमूल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण - भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुर सिरी बाबा गुरु नानक देव जो पर भी अपनी कई तखलकात भेंट चढाई हैं या यह कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा ? कुछ भी नहीं..... हाँ । इतना कहूंगा कि लोग मुझे “शायिर” कहते हैं —

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमूल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-ब-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ कियें कि श्री गोता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

میں قایل ہوں ۛ

ترجمہ :-

your right is
to work only , but
never to the fruit
thereof . Let not
the fruit of action
be your object ,
nor let your
attachment be
to inaction .

مجھے کام کرنا ہے اور پھر وہ کام
نہیں اس کے پھل پر مجھے اختیار
کئے جا عمل اور نہ دھونڈ اس کا پھل
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آشائے کہ وسیع النظری سے

نوائے گئے قارئین اور سامعین میری کرشن لیلے کافی حد تک متاثر ہونگے جس سے
ان کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات ابھر آئیں گے ۔

فاضل کاشمیری

گلشنِ نگر سرائیکہ 15

1-1-1984

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार
नहीं उसके फल पर तुझे इस्तियार ।
किये जा अमल और न ढूँढ-इसका फल
अमल कर, अमल कर, न हो वे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी मे नवाजे गए
कायरीन् और सामियीन मेरी “ कृष्ण-लीला ” से
काफी हद तक मुतासिर होंगे — जिससे उनके दिलों
में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगे ॥

फ़ाजिल कश्मीरी

गुलशन नगर
श्रीनगर-१९००१५
१-१-१९८४

कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लीला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद, नरोत्तमदास, रत्नाकर सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढ़ावा देने में हम उन्हें अमीर खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिखमत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाज़िल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को भङ्ग कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिमुखित

किया गया है — कृष्ण की बाँसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय-भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है । वही 'जय-जय हरि' कहने लगता है । उसका हृदय پاک-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता । फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन अल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मेल को धो डालता है —

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,
छलान हेंचन मुसलमानन दिलुक मल ।

फाजिल साहब कृष्ण की बाँसुरी की मधुरता पर मोहित हैं । बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है । बाँसुरी में फूँक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है । ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान जा सकती हैं । इसी बाँसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी ती एक ही समान हैं । कृष्ण के रूपा-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है । उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की वर्दीवन है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है । जिन व्यक्तियों

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिंगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सौहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण-काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

निजामउद्दीन

(निजामउद्दीन)

DR. NIZAM-UD-DIN

Prof. of Hindi

Islamia College, Srinagar

(Kashmir)

१२-१-१९८४

TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्योऽपि तद्गुणैः ।
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

*etad īśanam īśasya
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaih
na yujyate sadātma-sthair
yathā buddhis tad-āśrayā*



“मुरली शब्दा गव असि कनन
वनन छि राधाकृष्ण है भाव”

“مورلی شبدہ اسے گو کسن۔ وشن چھ را دھا کر شبنہ ہے سو”

TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not

affected by the qualities of material nature, even though He is in

of the Lord do not become influenced by the material qualities.

ترتیب

| شمار | مطلع | صفحہ شمار | مطلع | صفحہ |
|------|---------------------------|-----------|------|---------------------|
| ۱۔ | قطعہ: ۱۔ اگر چھ ظون سمر | ۲۲۔ | ۱۳۔ | قطعہ: شبیہ و حجم |
| ۲۔ | کرشنا کرشنا | ۲۳۔ | ۱۴۔ | تشریح کرن پوزا |
| ۳۔ | قطعہ: پتاما کرشنا | ۲۴۔ | ۱۵۔ | پیمیس پرشس |
| ۴۔ | کرشنا پندی پاتھو مخلوق | ۲۵۔ | ۱۶۔ | پہرن گیتا تہ |
| ۵۔ | قطعہ: پیر لونی | ۲۶۔ | ۱۷۔ | ارستہ خان گورنگھ |
| ۶۔ | کرشنا نو در تان بجاتے ہیں | ۲۷۔ | ۱۸۔ | کرشنا مہرجن دیا کر |
| ۷۔ | نوبصورت سانیہ آنکھو | ۲۸۔ | ۱۹۔ | گپاکن بلو منگل کور |
| ۸۔ | قطعہ: شبہ کار قطعہ | ۳۰۔ | ۲۰۔ | میمو لہرو پیرک |
| ۹۔ | تربہ یا ستمہ کھولتہ | ۳۱۔ | ۲۱۔ | میمو واجینی |
| ۱۰۔ | پیریمیش میہا | ۳۲۔ | ۲۲۔ | چچہ کردارک تھڑ |
| ۱۱۔ | چانہ پیریمیک زوگ | ۳۴۔ | ۲۳۔ | سور داسس |
| ۱۲۔ | میمون دل اوس | ۳۵۔ | ۲۴۔ | کرکھ یوڈ کرشنا سودا |
| | | | ۲۵۔ | کرشنا چوڑے نقشہ چچم |

۷۸. گپائی دوی چھے
۷۹. گپائی دوی چھے
۸۰. قطعہ: پھنڈو ژور پھیس گور
۸۱. اندس پیچھ۔۔۔ واصل
۸۲. گپو پھنڈو تہ گرس
۸۳. پیر کھ لود کرشنہ لیل
۸۴. ار کران پوزا کرشن جی
۸۵. تصویر کرشن پوزا
۸۶. کرشن سدا ما
۸۷. قطعہ: اکھ سدا ما چھا
۸۸. کرشن گودون سمٹ
۸۹. قطعہ: غریبن مفلسن
۹۰. گلن ہند۔۔ کرشن جی
۹۱. چھ برہمن دھرم گیان
۹۲. قطعہ: بانسری ہند سانہ
۹۳. مہربانی کرے کرشن
۴۹. کرشن پیرن
۵۰. رادھا چھ امتر
۵۱. ڈالہ شو بیا میون دل
۵۲. گپین پھس بالکس نش
۵۳. شری کرشنا امناک ویر
۵۴. ونہ ون بسمتوی
۵۵. روپ میون اوس
۳۳. جے جے پھنس منز گردان
۳۴. نظم کرشن جی
۳۵. قطعہ: بیا شہر دیت
۳۶. کرشنہ موری پیر پھڑ زمانہ
۳۷. گپال لہ پھو لن گل
۳۸. منز ویا تھ۔ اکہ تابہ
۳۹. کرشنہ۔ سالہ پتو
۴۰. مہر کن وچھ

- ۵۶۔ بالہ پانس لگوتے از ۱۱۲۔ صیف
 ۱۵۶۔ گلن ہند ترسم ۷۰۔ صیف
 ۵۷۔ قطعہ: یکدلی ہن شہ ۱۱۶۔ ۷۱۔ بالہ کرشنن یام ڈرسم آگے ۱۵۸
 ۵۸۔ قطعہ: کئی نین نظر ۱۱۷۔ ۷۲۔ قطعہ: بے خبر پائٹھو ۱۶۰
 ۵۹۔ بالہ پانس لگے جامے ۱۱۸۔ ۷۳۔ شعورس لاشورس منر ۱۶۰
 ۶۰۔ قطعہ: وجودک سر ۱۱۹۔ ۷۴۔ دلن گودین ودھرک ۱۶۲
 ۶۱۔ رادھا و نان چھ ناھتس ۱۲۲۔ ۷۵۔ قطعہ: صحی دھڑھ ۱۶۳
 ۶۲۔ کس نام وایان ! ۱۲۴۔ ۷۶۔ یاسمٹھ یہ آدم دین ۱۰۴
 ۶۳۔ مہ چھا انکار ماتا ! ۱۲۸۔ ۷۷۔ کرشن جی اجنس ۱۶۵
 ۶۴۔ قطعہ: جہاسا کرشن ۱۳۷۔ ۷۸۔ قطعہ: یام دھرتی پیٹھ ۱۶۶
 ۶۵۔ ہے ! نے چھ گڑھان ۱۳۸۔ ۷۹۔ چھ بھگون ناسہ ترسن ۱۶۸
 ۶۶۔ قطعہ: کرشنہ مہرلی ۱۴۴۔ ۸۰۔ ستمکار و ستم کور ۱۶۹
 ۶۷۔ میثرو نے پرانہ وینچ ۱۴۷۔ ۸۱۔ کرشن کہانی ۱۷۰
 ۶۸۔ گیت: کرشن بانری ۱۴۶۔ ۸۲۔ ہرے کرشنا ! ۱۸۹
 ۶۹۔ قطعہ: مس مس کرشن اگر ۱۵۵۔ ۸۳۔ قطعہ: کرشنہ چھ کھتم رنگ ۹۲
 ۸۴۔ تقاربطہ الہ: ۸۴۔ ۸۵۔ کرکھ ۱۵۵

۱۔ پرو فیروز نظام الدین ۲۔ ڈاکٹر جلیت موسیٰ ۳۔ علی محمد لنگر ۴۔ پرو فیروز حسن لال ستیرو
 ۵۔ شیوا چاریہ سوامی لکھن جو گیت لنگا ۶۔ لالہ میلدارام نجیون کو کج باغ



راڌا جي پيالو ۾ ڪو پيالو ڪن وڃي - نه ڪالو نه سائو دماھ - لاله ميه ڪن وڃي

راڌا جي 'بڙي پيال' ۾ ڪو پيال' ۾ ڪن وڃي

پڙ ڪال پيڙي سال' دماھ لال' ۾ ڪن وڃي

ڪنڊاڪن ڪلاناڻو هڏيانند ڊاڀيڻو،

مڪڻڊو راڌيڪا ڪڙڻو ٻڙهڻ ڪو ڄڳاميڻو ॥

اگر چھ ظون سمر بھگوانہ سندی گون
 تریہ سپدی شود پین دل ہیر تے یون
 چھ تم سندی ناو سمرن عین اکسر
 بناوان کیمیا گر چھ کھولس سون

अगर कृप्यवन सुमर भगवान् संधि गोन
 त्रय सपदी शोद पनुन दिल हेरि तय बोन
 कु तम्य सुंद नाव सुमरुन एन इकसर
 बनावान कीमियागर कृप्य खोलिस स्वन

میں نش آو۔ بار بار آو۔ بار بار آو
 کوہن میانس موندس منز پور پھر آو
 تمس کن اکھ قدم تل یاری لاگی
 کری اوئے دیا بھگون تریہ آزماو

म्य निश आव बारहा आव बारहा आव ।
 कोरुन म्यानिस् वीन्दस मंज पूरु ठहरव ॥
 तमिस कुन अख कदम तुल यार्य लागी ।
 करिय औरय दया भगवान च अजमाव ॥

Swami Prabhupada

कृष्ण कृष्ण

कृष्ण कृष्ण

Kṛṣṇa Kṛṣṇa

कृष्ण कृष्ण



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa means
'all-attractive.'

What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"

پیتا ماتا: کرشن۔ ماتا پیتا سے
 گورو سے گہیاں سے تے آتما سے
 دلس شرو پیت۔ اچھن منز جائے تم سنز
 محبت سے خلوص پیر دیا سے

پیتا ماتا کृष्ण - ماتا پیتا سۄی
 گورو سۄی جنان سۄی تہی آتما سۄی
 دلس سۄی پۄپۄت اچھن منز جائے تم سنز
 مہوبت سۄی خلوص پیر دیا سے



کृष्ण پۄپۄت پۄپۄت مۄپۄپۄت پۄپۄت مۄپۄپۄت
 کران دھیس پۄپۄت پۄپۄت گۄپۄت، تہی کران لہلہ ॥

KRISHNA



کرشن پُتری پٹھو مخلوقن پُین مول
کران چیس پونپیرنی گتھ تم برلن لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پیرز لوزی دست و پا چم سریه کشتش
دیکو یم نقشه نام سریه کشتش
یمو کاتیا حین پمپوشه سر کرد
یمو ستو تخ سجاوم سریه کشتش
۱- دست = آخه - ۲- پا = کهور - ۳- تخ = تخت

प्रजलवृत्त्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस
दिलक्ष्य इम नक्षि हाविम श्रीकृष्णस
यिमव 'कर्म' हसोन पंपोशि सर 'कर्म'
यिमव सूत्य तख सजाविम श्रीकृष्णस



His
Divine
Grace

श्रीकृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं



خوبصورت

● خوبصورت سانبہ آنگنو ڈاوتے
گوپین دی تو کرشن سون آوتے
کرشنہ دیوٹھم ترھاپہ رُوس زن ماتاب
شامہ ترھاین سریرہ ہیو نوں دراوتے
میون دل اوس دابر رُوس درواہر رُوس
آٹھو اندر پتر رھنے کوڈن ٹھہراوتے
توہستی اونڈ یو کھ گرگ کوہنم نہال
من پرسن چھم۔ دل بران چھم چاوتے
ذکر پیٹھ تے فکر پیٹھ کرشم دیا
میانہ غفلت ہند ہیوتن ماناوتے
کرشنہ اویٹھم تیوت رڑی رڑی سیر گوس
توتہ دو پیٹھ بیٹھنہ روزی گراوتے



खूब सूरत सानि आंगु'न्य चाव तय ।
गूपियन दे'प्य तव कृष्ण सोन आव तय ॥

कृष्ण ह्यूठुम छांयि रो'स जन माहताब ।
श्याम् छांयन सिरिय जन नो'न द्राव तय ॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाजु' रो'स ।
अंध्य अन्दर प्रछनय को'रुन ठहराव तय ॥

नूरु सात्य ओ'न्द पोख गरुक कोरनम निहाल ।
मन प्रसन्न छुम दिल बरान छुम चाव तय ॥

जिकिरि प्यठ तय फिकिरि प्यठ करनम दया ।
म्यानि गफल'त्र हुन्द ह्योतुन मा नाव तय ॥

कृष्ण सुतयम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस ।
तोति दोषयम "युथ नू रोज्यम आव तय" ॥

یوہ ترھورم، اوہ کرشن گونس
 بس کنی کتھ: کرشنہ گارن پراتے
 کرشنہ سہرت کر تہ چشمو ڈیشہن
 یوہ نہ باور چھے ذرا اندھاو تے
 بانسری کن کن تھووم بمنزل سورم
 فاضلا اسم ننگن مہہ گو صحراو تے

شہکار

مہہ گو بیدار بخ از گوم بیدار
 وچھم دپرو کرشن تس سیرہ انہار
 سہ گورمت و مستہ کارن پوز صنم پو
 دتن زگلش پنن اکھ حسن شہکار

योर् छोरुम ओर् कृष्णन मोरनस ।
बस कुनी कथ—कृष्ण गाहन प्राव तय ॥

कृष्ण स्मरण करतु चरमव डेहिह ।
योद नु बावर छुय जरा अजमाव तय ॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मजिल सुहम ।
'फाजिला' आंगुन म्य गव सहराव तय ॥



म्य गव वेदार बरुत अज गोम वेदार ।
बुछुम दीदव ; बुछुम तस सिरियि अनहार,
खुदा सबन कृष्ण गोर सोंच कंथि कंथि ।
दितुन जगतस पनुन अख हुसनि शाहकार ॥

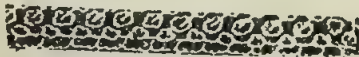


میرا یہ پیچہ کرشنہ دیا

پریمہ پتر میاں سو گیا بچ کنوئیل
جلو ماوتھ بختہ بد کر حقن نہال
بالہ کرشنا! تس یہ پتر صحنہ دیکھ نہ گو کہ
قی دتم چھہ پنہ غطر ہند سوال

ژبہ یاسقہ کھوڑا تھم سقہ دیشکو بر
 کھوڑن تل وچھ مہ صحرآ کوہ تہ سنگ
 مکانکو تے زمانکو حلقہ ترھوڑ گام
 چھہنا کرشنہ گویالا تر یاور

چے یامت خولتھم سقہ دیشکو بر
 خورن تل وچھ مہ صحرآ کوہ تہ سنگ
 مکانکو تے زمانکو حلقہ ترھوڑ گام
 چھہنا کرشنہ گویالا تر یاور ॥



मीरायि प्यठ कृष्ण दया

प्रेम हेच मीरा न्व जानुच कुन्य मिसाल,
 जलवु हा विथ अरकेंच करथन निहाल ।
 बालु कृष्ण तम यि पितृनय दिथ चु गोख
 मी दिनम म्य पनान अजमच हुन्द सवाल ।



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانه پريمکاس زونگت بيمن لوگ سورگو
 سريه من پير وون نژدن هيند نورگو
 لک قسائی پيرانه سپنج لبت اس
 قوه به ستره ميرابه انگ انگ خودگو

वानि प्रेयमुक जोगं येमिस-लोग मूर गव,
 सिर्ययि मन प्रोवुन जूचन हुन्द तूर गव ।
 लन तरांनी प्राणि समयिच रीत ग्राम ,
 कोर्व सत्य 'मीरायि' अंग अंग तूर गव ॥



میون دل اوس دآرے رو'س دروازے رو'س
 اٹھو اندر پہنچنے کو'ن سٹھر رہو تے

मिथुन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़े रो'स।
 अठ्ठ अन्दर पहुँचने को'न ठहराव तय ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माम, दो नैना मत खाइयो, पिया

ॐ सत सत ॥

मिलन की आस ॥

Love at first Sight

خاند

شپہ کرتشن وچم دھرتی بنیل گو
 اچھن تہندس شپہس ستی میل گو
 وجودک ویش تھووم بس آیتن تسو
 کرتشن پرووم مہ کیت خاند مرھیل گو

۱۔ شپہ = فوٹو

۲۔ ویش = جایاد

۵۔ آیتن = حافر



(میل)

۲۔ دھرتی = زمین
 ۴۔ مرھیل = سفلی

۶۔ پروون چال کن

शबीह कृष्णुन वृद्धुम दारती बुन्धुल गोव ,
 अद्वन तंहदिस शबीहस सत्य म्युल गव ।
 वनूदक व्युच योवम बस आयितन तस्य,
 कृष्ण प्रोवम म्य वन्यत खांदर सद्धुल गव ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माम, दो नैना मत खाइयो, पिया



شرع کړن پوړۍ پښتیک اظهاده پي
 کرشنه بجلتن شرله منبرنام کار پي
 زاید! ایچنه کرشن دشن دوان
 دل کړن موصلم - دئی اودهاده پي

شری کران पूजा—पञ्चुक इजहार यो,
 कृष्ण भक्तेन शुलि मंज ताम कार यो।
 जाहिदा ! यिथिन्य कृष्ण दर्शन दिवान,
 दिल करुण मोसूम दियी मोधार यो ॥



غبارِ لَوْن

قیمت

یَمِیس پَرشس زَنَمِ پیو و پھر وڈ پانس
رین کن کرشنہ و تھ ووت لکاس
چھے پیرالب گنیر اگر وڈ سنر کل
بنی پمپوشہ سرانگ انگ زبہ پانس

انسان

مدیرِ تحصیل

مساوات نہ ہو کہ لوگ بے افضل کہتے ہو کہ ایک مسکے دوست بے لاک کا حباب نیک

پرن گیتا تہ کرشنن داس سیدکھ
 سورن گیتا تہ کرشنن مائے پراؤکھ
 کری میل کرشنن لال سیتو سمرن
 سمر گیتا۔ سمر کرشنن مہ کڈ تھاکھ

پرن گیتا تہ کرشنن داس سیدکھ
 سورن گیتا تہ کرشنن مائے پراؤکھ
 کری میل کرشنن لال سیتو سمرن
 سمر "گیتا" سمر "کرشنن" مہ کڈ تھاکھ

येमिस पुरुषस जन्म प्यव फ्रूच पानस,
 रटन कुन्य कृष्ण वथ वोत लामकानस।
 छुयथ प्रालब्ध गनिर अक्रूर संज कल,
 बनिय पंपेशि सर अंग अंग चे पानस॥

नोट -

वल=गंड, मुशकिल





भक्त रसखानपर कृपा

१. मुरायी

رسته خانن گورنکھ گرتھس دیا
 لولہ والین کتر دیا کینہ کم چھیا
 ناپہ کارہ چھس۔ مگر چون داس چھس
 بکرتہ داسس پیچہ تہ از مہرچ زکا

یتمس پیچ کشته مهر آجین دیا کر
به آسانی تمس ناو ساگر تر
حیاتی تنز پیچ جیون ته حادان
سه وانسن زنده رود پهلون عمر زار

यमिस प्यठ कृष्ण मङ्गरानन हया। 'कर
ब आसानी तमिस नाथ सागरस 'तर
हयाती तिहिजि प्यठ जीवन ति ह'रान
सु वांनन जिद हृद प्रवन उमर चर

रसग्वानस टोठचव दया

इस खानन गोरनाथ करिथस दया,
 लोल'वायन किच् दया कहैं कम छया ।
 नावु'कारा छुस. मगर चीन दास छुस,
 करतु दासस प्यठति अज भ्यहरुच निगाह ॥



भक्त बिल्वमंगलपर कृपा

گیالین بلو منگل کو ر یہ خوشحال
 تمس اوس کرشنہ سمین حالتے قال
 اوے کر نو نس منزل سوا گت
 چھ کوتاہ رت دیا لو کرشنہ گو پال

یمو لہرو و پُرک قصرِ شاہی
 تمو کر پانہ سے اُسخرِ تباہی
 کِشن مہراج و وٹھ اُدھار کورناکھ
 چھ کوتاہ جان بھگون یا الہی!

یشمव लुहरोव पजरुक कसरि शाही,
 तिमव कर पानसुय आखुर तबाही।
 कृष्ण महाराज वेथ उधार कोरनाख,
 छु कोताह जान भगवन या इलाही!

गोपालन बिल वे मंगल कुरुय खुशहाल,
 तमिस ओस कृष्ण स्मरण हाल तय काल।
 अवय करनाव्यनस मंजिल स्वागत,
 छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल॥



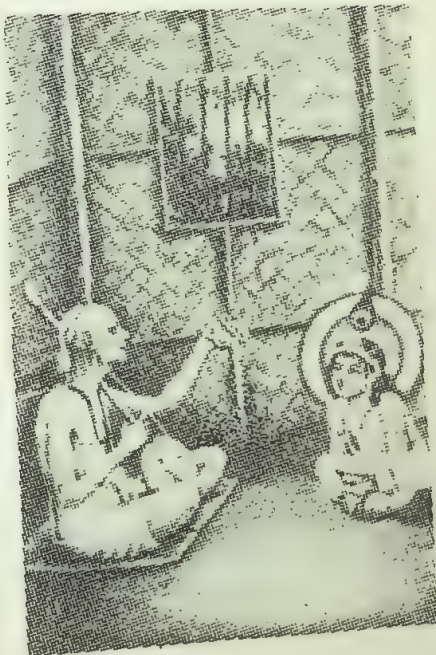
फलवालीपर कृपा

میو و اجینز بختہ بد آکھ نازنین
 کرشنہ سمرن اوس تس پڑاتہ دین
 پڑتھ میوس منز در بھی گو تس کرشنہ رنگ
 ہوو نس تم موکھ پنن۔ کوتاہ چین

چھ کردارک تھزرو لود کرشنہ بھگتس
 تمس گیاچ تیش پانس اندر مس
 چھ لوگون تس نشے یش دور یش دور
 تھوان بھگون پرش یتھ ستی پانس

छु किन्दारक थजर व्योद कृष्ण भक्तस,
 तमिस ज्ञानुच्य तपिश पानस अन्दर मस ।
 छि अवगुण तस निशे यच्च दूर यच्च दूर,
 थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यन्य भक्त वड अख नाजनीन,
 कृष्ण स्मरण ओस तस पूजा तु दीन ।
 प्रथ मेवन मंज द्रांथ्य गव तस कृष्ण रंग,
 होवनस तम्य मुख पनुन कोता हंसीन ॥



سورا سس کرشنہ! بخشہ گیان دیہیا
 تشنہ ہردن گو سہ عرفان باگران
 کیاہ گزھی کم یو دمہ تے ساگر کرکھ
 لکھ مہ منز ییختہ آسہن تارس تران

کرکھ یزد کرشنہ سودا کن پنن دل
 مگر سودا بنن دوہن منز چھ مشکل
 کری ما اور بھگون بخت بیدار
 ملے کر کرشنہ بھگتی بن تر فاضل

करख येद कृष्ण सोदा 'कन पनुन दिल,
 मगर सोदा बनून दुन मंज छु मुशकिल।
 करो मा ओरु भगवन भक्त बेदार,
 मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च फाजिल ॥



सूरदासस आनुथ गाथ

सूरदासस कृष्ण वसुथ जान ध्यान,
 तश्नु हृदयन गोनु हरफान बांगरान।
 क्याह गल्ली कम योद म्यते मागर करख।
 नुव म्य मंज्यु आसहन तारस तरान ॥



श्रीकृष्ण-चरण

کرشنہ! چونے نقشہ پاچھم شوڑ من
 چھس اوئے کو دین و دھرم و تھ سون
 پی کران لچھ منزلن ہنر و تھ گم
 چھیکرس چھس پانہ از منزل بنن

کیا خدا ہے؟ اس کا جواب لیتا دیتی ہے۔ خدا ایسا ہے بلکہ خدا ایسا ہے۔ دوسرے

شری کرشننو چرن سادھن کلس پیچ
 مگر یارس چھلان پینو اتھو کھو
 یہ کرنس منز تمبس حاصل پرست
 یہ گو پریمک غلو صک آخری حد

نوٹ :- ایار : سدا ما جیس کن اشارہ پرستنا : بخشی ہست ۔

श्रीकृष्णन्यकरण सादन, कलस प्यठ,
 मगर यारस छलान पन्वयव अथव खुर।
 यि करनस मंज तमिस हासिल प्रसन्नता,
 यि गव प्रेममुक, खलुमुक आखरी हृद ॥



कृष्ण! चोनुय नकसि' वा छुम भूच मन,
 छुस भवय किन्य दीन' धर्मच वय स्वरन।
 यी करान लछ म'जिलन हंज वय क'हुम,
 छेकरस छुस पानु अज म'जिल बनन ॥



श्रीराधिका-चरण

بادِ دعا چہ آئش کرشنہ و تو دالہ اُن زان
 پرتھ منزل س پیچہ زانہ و نین باگہ دتن گیان
 محروم پیرشن بانہ دین دیت نہ بخش دل
 اتم گاشہ نش یئر دور پیہمتی اُتی تہ پریشان

पम्पोश पाद

डालि शूब्या म्योन दिल मुरली दरस
 बस योह्ये पम्पोश फोल म्यानिस् सरस
 दिल छे दिल पम्पोश पादन हुन्द अक'स,
 डाल्य गुजराविथ खोरन म्यूठा करस ॥

पम्पोश पाद

डालि शूब्या म्योन दिल मुरली दरस,
 बस योह्ये पम्पोश फोल म्यानिस् सरस ।
 दिल छु दिल पम्पोशि पादन हुन्द अक'स,
 डाल्य गुजराविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि आमुच कृष्ण वतव, डाला अग्निन जान
 प्रथ मैजिलस प्यठ जानुबुन्य न बागि दितुन जान
 महर्लम पुरुषण बानु, दयन छुतु नु बखशुन दिन,
 तिम गशिनिश यच दूर प्यमति अन्य त परेशान

گیشوم



گیشیمس بالکس نش نرون شران
 پری چھا! خور چھا! اوتا انسان
 اچھن وزمل، ڈیکس زندم موکھس گہ
 یہ وچھتے کاہہ دیوس ہوش روان

अन्तवन्त इमे देहा नित्यसोकाः शरीरिणः ।

अनाशिनोऽग्रमेयस्य तस्माद्यद्यस्त्र भारत । १८।

سرى كرتشنا ! منك ويزر با وفا دم
پتا ماتا چهره سم پرتيچ ديا دم
يمن ميانين گوئن پهر امرتنگ سنگ
امى سته زنده بهير كا سم بقا دم

श्री कृष्ण ! मनुकं व्युच वावफा दिम
पिता माता छुहम प्रमच्य दया दिम
यमन भ्यान्यन गुणन फिर अमृनुक सस
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम वका दिम



ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान
परो छा ! हूर छा ! अवनार इन्सान ।
अछन वुजमल, इयकस चन्द्रम मुखस गाह
यि वुछयय कामदोवस होश रावान ॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।

उभयोरपि दृशेऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः । १६।



سَمی توی گوپیو شالم اے ترو
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای
 پوشہ پوزا کر تھ لولہ شبدہ پیرو - بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

۱۹ کبھی کبھی کرتی نہیں آتیں، کبھی خود بھی مرنے نہیں آتیں
 کبھی کبھی کرتی نہیں آتیں، کبھی خود بھی مرنے نہیں آتیں
 کبھی کبھی کرتی نہیں آتیں، کبھی خود بھی مرنے نہیں آتیں
 کبھی کبھی کرتی نہیں آتیں، کبھی خود بھی مرنے نہیں آتیں

अज्ञो नित्यः शोभतोऽयं पुराणा
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥

कदाचि-
न जायते म्रियते वा

न भूयः ।
नानां भूतानां भविता वा न भूयः ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥

रूप म्योन ओस मनहेमी सत्य नार ज़न,
जुमहरीरुक्थ पाठ्य शेंहलोव सोचनन ।
तन हरास्त-मन कुज्ञानुच चेनुवन,
चेनुवन ज्ञानुच दिचुम मोरलीधरन ॥

रूप म्योन ओस मनहेमी सत्य नार ज़न,
जुमहरीरुक्थ पाठ्य शेंहलोव सोचनन ।
तन हरास्त-मन कुज्ञानुच चेनुवन,
चेनुवन ज्ञानुच दिचुम मोरलीधरन ॥



(वनुवन

सम्यतवी गुपियव शालुमार हय तरव,
बालकुण्णस करव पोशि पूजा ।
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह परव
बालु कुण्णस करव पोशि पूजा ॥

कदाचिनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।

گو کس ساری ہے زینہ زو کہ کرو جاپہ جاپہ ہے کرو تندر مس سال
 پریمہ سریمہ بانسری لولہ تھان برو
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

اُفنج مورتھ پتھ شریس گرو۔ لولہ والہن دپو پتھ برن مے
 مایہ ہوت اکھ قدم تل ترچھ مامرو
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

سالہ لوگ پریتس پتھ بہن مازو۔ سارے دل تہ شل اچھ لوشا
 گونہ لچ آہ جھو۔ نرنہ لکیم سرو
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

حسنہ آکاشہ کنو لعل و گوہر ہرو۔ تار کن فاضلا شولہ بہر لکاش
 دیوین گوڑھ وٹن پانہ اند تر او رو
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

न च न कहेतयन्नादी न शोषयति माकतः ॥

गूकुलस सायंसय जितिनिजूलाह करव,
जयि जयि हय करव चन्दरमस सान।
प्रेयम स्नेह बांसुरी लीलु थालन बरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

उत्फतच मूरथा यथ शरीरस गरव,
लोलवात्यन वसि यथ बरिव माय।
मायि हेत अख कदम तुल च वुछ मा मरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

मेलु लेग परवतस पथ ब्युहुन मा जरव,
सारिनय दिल तु शिल अज छि तोशन।
ग्यवनि लज्य आब जुय नचनि लग्य यिम सरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

हुसनु आकाशि किन्य लालु गोहर जरव,
तारुकन 'फाजिला' शोलि प्रागाश।
दीवियन गेछ वनुन पानु अज आवि रव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥



वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
नि संयाति नवानि देही ॥२२॥

अच्छेद्योऽयमदाहोऽयमवेद्योऽशोष एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥



جے جے !

منس منز گز ان بانسری ہنر مود نے
 یہ لے بالہ کرشنا چھ چانی تہ جے جے
 پزیک آلہ گو و ن منس پیا پے
 یہ چسانی چھ بڈ مہرانی تہ جے جے
 دو دک شریہ تہ امریت چھ کھاسن برانے
 چھ اتھ سلسیلہ روآنی تہ جے جے
 موکھسن پیچھ گلاب پانہ پزیمی تہ چھ دے
 نہ کہنہ چھ بڑا بر نہ ثانی تہ جے جے
 دینی کم گڑھتھ پانہ منزل گڑھان طے
 پئے گون کران پاسبانی تہ جے جے

نہا راج کیسویں آج کیسے کہوں کہ اتار دے میں برے میں شک

जय जय

मनस मंज ग्रेज़ान बांसुरी हुंज मोदुर लय,
यि लय बाल कृष्णा छे चा'नी चे जय जय।

पङ्कुक आलुवाह गव वनन मंज पयापय,
यि चा'नी छे ब'ड मेहरबानी चे जय जय॥

दो'दुक स्नेह त् अमृत छे खास्यन बरान नय,
छे अथ सलसबोल'च' रवानी चे जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पान् प्रेमी चे छुय दय,
न कांह छुय बराबर न सा'नी' चे जय जय।

दुयी कम गंछिथ पान् मंजिल गङ्गान तय,
यिसय गुण' करान पासबानी' चे जय जय॥

नोट : 1. सोरगुकसर 2. चे ह्युव 3. सिफत
4. राछ

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।

न च श्रेयोऽनुपक्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥

येषामर्थं काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च

किं भोगैर्जीवितेन वा ॥

निहत्य धार्तराष्ट्रान्तः का प्रीतिः स्नाजनादन् ।

पापमेवाश्रयेदस्मान् हत्वा तानाततायिनः ॥ ३६ ॥



राधायि वनिव शामु गटन छायि कृष्ण जी,
दर्शुन छि दिवान पानु कम्पू आयि कृष्ण जी ॥

थन्य नक्कशि बनिथ गाशि बुधिस गाजु ब्रमन गव,
लोलस तु हृदयस सिरियि छु सरमायि कृष्ण जी ॥

यथ जायि लुकन मायिब्रूत स्नेह तु समुत रबोय
सुलहुच छे वायान बांसुरी तथ्य जायि कृष्ण जी ॥

यथ क्रयि भातश नारु तचर त्रेशि हत्यन लेग,
तथ कायि गंगा अयि शुहुल सायि कृष्ण जी ॥

"फाजिल" छु बखतस बागि थजर लानि स्यजर
तस,
यस प्रेमसानुय तीरि नजर लायि कृष्ण जी ॥

नोट -

त्रायि = नहजि २ गाजु - पोड़र

३ व्युच - सरमायि

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।

मातुलाः श्वशुराः पुत्राः श्यालाः संबन्धिनस्तथा ॥ एतान् हन्तुमिच्छामि मृतोऽपि मधुसूदन ।



لے (دھو لیا ہنزلے)

یام شہ دیت کر شہ اوتارن نے
جے ہری گود زگتہ سمسارن دے
لے اڑتہ نہ اٹھ یا نہ نہ اٹھ گہ بہلہ
کل دیشی حے تھو تھ کن تھ لے

لے یس کہنے چہر زہد چہر مشن حیوانات، نباتا تہ جمادات بیتہ -

۳۷- یہ دھرتی راتھ کے جو فرزند ہیں، یہ نادھو سب اپنے جہنم میں

कथं न इयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।

कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥

॥३९॥ कृष्ण मुरली प्रथ जमानस मंज वजान,

किश्ने मुरली प्रथ जमानस मंज वजान,
 यिम छि बोजान तिम छि बारन्य हिक्क बनान,
 या इलाही ! यूत तासीर छा शहस,
 तफरिक्क वल हल छु अकवामन गछान ॥

कृष्ण मुरली प्रथ जमानस मंज वजान,
 यिम छि बोजान तिम छि बारन्य हिक्क बनान,
 या इलाही ! यूत तासीर छा शहस,
 तफरिक्क वल हल छु अकवामन गछान ॥



याम शह छुत कृष्ण अवतारन नये
 “जय हरी” कोर जगत संसारन दये ।
 अज ति जानिथ या नु जानिथ गहबेगह'
 “कुल्लुशयुनहय” थविथ कन तथ लये” ॥

- नोट । 1 गहबेगह— कुनि कुनि विजि
 2 ‘कुल्लुशयुनय’— यि छेछाह जिन्दह छु
 3 लये— भावाज

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।

लोभोपहतचेतसः । पश्यन्ति न शद्यप्येते न पश्यन्ति स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥

تلا بانسری تل!

گپ لا! پھولن گل۔ ذرا بانسری تل
 تڑپہ پیارا چھ بلبل۔ ذرا بانسری تل!

تڑپہ ریمک تہ لوک مجسم مجسم
 فداجھی تڑپہ کم کم۔ ذرا بانسری تل!

نبس پیٹھ سلی کور تمنا ستارو
 قدم تھو قدم تھو۔ ذرا بانسری تل!

تڑپہ پرتو مہ تر و تھ مگر تڑپہ تڑپہ
 گجس چاہئے مائے۔ ذرا بانسری تل!

۱۔ ذرا = پہنہ ۲۔ نب = آسمان ۳۔ تمنا = شوق ۴۔ پرتو = جلو

ہم قبیلہ فنا گرد کوئی ہو گیا قدیمی وہ دھرم اس کا سب کھو گیا

बाँसुरी तुल

गुपाला ! फोलन गुल, जरा बांसुरी तुल,
चै प्रारान छि बुलबुल, जरा बांसुरी तुल ।

च प्रेयमुक त लोलुक मुञ्जसम मुञ्जसम,
 फिदा छी चे कम कम, जरा बांसुरी तुल।

नवस प्यठ सुली कोर तमन्ना^२ सितारो,
कदम थव कदम थव, ज़रा बांसुरी तुल।

धे परतव' म्य त्रोवुय मगर छायि छाये ,
 गजिस चानि माये, जरा बांसुरी तुल ॥

नोट :— 1. कोरबान 2. :— यछा 3.— जसब

धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।

گلن منز ہر گوا یتو گاشرو ورا
اچھن مہیلو ملو، ذرا بانسری تل!

پمن گوپین منز تہ مومری دتھتہ
تمو کوڑ دی لہ، ذرا بانسری تل!

ثر بالک او ستھا، تہ شوبھاچھ عظمہ
ثر لگتھ حقیقتھ، ذرا بانسری تل!

کشش ہش کشش چھ تہ اتھ بالہ پانس
ثر مرکزہاس، ذرا بانسری تل!

دماہ سائہ پھتو! سہ تھو و از لو تھ دل
چھ فاضل تہ مایل، ذرا بانسری تل!

۱۔ شہ: چھو کہ ۲۔ لہ۔ لہ۔ لا۔ انکار ۳۔ مرکز۔ اوہو کہ ۴۔ لو تھ۔ او تھ دو تھ

۳۔ قبیلوں کو غارت کرین جو بیشتر ہوں ورن ان کے پاپوں سے زیر و زبر

अहो वत महत्पापं कर्तुं न्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं सज्जनसुवताः ॥४५॥

॥४४॥ महिम्निन्यापेक्षे । मोक्षे । पक्षे ।

गटन मंज हुरघर गव घितो गाशरो बल्य,
अ'छन मेलतो म'ल्य, जरा बांसुरी तुल ।

यिमन गूपियन मंज चै मोरली वितुथ शह,
तिमव कोर दुयो लह', जरा बांसुरी तुल ।

च' बालक अवस्था, चै शोवा छय अजमथ'
च जगत'च हकीकत, जरा बांसुरी तुल ।

क'शिश हिश क'शिश छय चै अथ बाल पानस,
च मरकज जहानस, जरा बांसुरी तुल ।

दमाह सानि बेहतो, मे थोवमय लिविथ विल,
हु 'फाजिल' चै मायिल, जरा बांसुरी तुल ॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर

दोषैरैतैः कुलमानां वर्णसंकरकारकैः ।

जनादिनां मनुष्याणां उत्सवकुलधर्माणां उत्साधन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥

منزل پاتھ



آلہ - نابد - زیرہ - بادم چھکیو
لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از ولو
درشنک و آسن مہر و دم آرزو
لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از ولو

ہی تہیمبرزل تہ جافری تے گلاب
یاسمن پیمپوش وری کیو، آخاب
یم دین کری یاد تم گل لاگیو
لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از ولو

دوسرا دیباے

دین جے نے کہا

ایجو از جن کا دیکھا یہ رنج و ملال تو غم و سوز دل کہیں طبیعت نہ حال

अनापुष्टिदमस्तममकीतिकरमज्जि ॥ २ ॥



माल, नाबद, चेर, बादाम, छिकयो
लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ।
दर्शनुक वांसन मे रुदुम आरिजो,
लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥

ही तु यम्बरजल तु जाफुर्य तय गुलाब,
योसमन, पम्पोश, विरिकेभ्य आफताब,
यिम दयन केय पादु गुल तिम लागयो,
लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्तोचितं परंतप ॥ ३ ॥

विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥

विषमे समुपस्थितम्
कुरुमलमिदं

कुतस्त्वा

میانہ واران سپنے کین بچرن اندر
اکھ دینچ کوٹھڑچھ پھٹم زن کھنڈر
چانہ بابچہ چھم لوٹھ تھوڑیہ دو
لولہ بڑتیو کرشنہ لالو از دلو

سریہ ہوکھ تہ ندریم ڈیکس تارکھ جبرٹھ
ہرنہ چشمن زن زبہ چھ امرت بڑٹھ
دل چھ لیم گاہے تہ نہتیم رو برو
لولہ بڑتیو کرشنہ لالو از دلو

چانہ ویرے گوکل کو منزل ٹھنڈم
وڈ دیم جننایہ بھو بھو پے تھوم
در اصل چھم لیس مہ چوئے بھستجو
لولہ بڑتیو کرشنہ لالو از دلو

الجن کا جواب

وہ بولا کہ اے فالح دشمنِ مرثاں بدھو بار! مجھ سے یہ ہوگا کہاں

न चैतद्विद्वाः कतरन्नो गरीयो

यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।

॥ ५ ॥ महानुभावान् गुरुनहत्वा हि
महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं

म्यानि वारान सीनुन्यन पंजरन अन्दर,
अख दिनुच कूठरछि फुटमुच जन खण्डर।
चानि बापथ छम लिविथ थवमच मे-दो,
लोल बर्यत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥

गुरुनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भक्ष्यमपीह लोके ॥



सिरियि मुख चन्दरम ड्यकस तारख जेरिथ,
हरण चशमन जन जे छुय अमैथ बरिथ।
दिल फोत्यम गाहे च बिहतम रोबरो,
लोल बर्यत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥



चानि बेरे गूकलक्य मंजिल छंडिम
बन्य दितिम जमनायि बंठय २ पय ३ पविम
दर असल छुम बस मि च्योन्य जुस्तजो,
लोल बर्यत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥

॥ ४ ॥

इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हाविरसदन ॥ ४ ॥

यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेजस्विताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

नोट— १ आबे ह्यात २ तलाश ।

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।



سالہ پتو!

کرشنہ گویا! دماہ سالہ پتو سریرہ میٹالہ دماہ سالہ پتو
 میانہ اماں! چھ مشکل بے رنجی وہنی کووڈالہ دماہ سالہ پتو
 انتظار ہی بے قراری پیرالبس زہ کس کھالہ دماہ سالہ پتو
 بانسری تل! زن وسن ہتھ سلبیل اسی ہر وہ پیالہ دماہ سالہ پتو
 فائنلن تھوومن سجاوتھ بس ڈیہ کیت
 ازسلی کالہ دماہ سالہ پتو

یہ طبیعت ہے کمزور دل نہزم ہے یہ اجھن ہے اب کیا مراد ظہر ہے

एवमुक्त्वा

दुषीकेशं गुडाकेशः

परंतप ।

न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥

संजय उवाच

सालु यितो

कृष्ण! गूपालु! दमा सालु यितो,
सिर्य मीसालु दमाह सालु यितो ।

म्यानि अमारु! छे मुशकिल बेरुखी;
वोन्य कवो चालु, दमाह सालु यितो ।

इन्तिजारी, बेकरारी प्रालबस,
राह कमिस खालु, दमाह सालु यितो ।

बांसुरी तुल जन वसन हथ सलसंबोल,
अस्य बरव प्यालु, दमाह सालु यितो ।

“फाजिलन” थोव मन सजाविथ बस वे
कयुत

अज सुलो कालु, दमाह सालु यितो ।

नोट : 1. नसाव, तकदीर, 2. बर्गुक सर

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः

पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।

गच्छेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे

शिर्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥

न हि प्रपन्न्यामि भगवन्नुद्यद्

यच्छोकमुच्छोषामिन्द्रियाणाम् ।

इति श्रीमहाभारते

अर्जुन

॥ ७ ॥



مہ کن وچہ

رادھاپہ بُری پیالہ تڑپ گویالہ مہ کن وچہ!
 اذ کالہ یزیم سالہ دماہ لالہ مہ کن وچہ!
 مودلی دکنے شہ تہ گلن پھر پن رنک
 بلبیل تڑپ کرن یوسمن سالہ مہ کن وچہ!
 تن ٹھنوتہ بھٹھس جلو، اچھن سیچر دیکس گہ
 زن بریہ تڑپ موصومہ کرٹھہ نالہ مہ کن وچہ!
 ۱۔ پھوکہ
 ۲۔ گاش
 ۳۔ دایرہ حلقہ

۱۔ ادھر دھونج تھی اور ادھر دھونج تھی دل الہین کا اور من کی اک سرج تھی

گوکل بہ نمٹھ شاہ گن ترہایہ وندے زو

یادم تہ خفر، آلہ چھکے عقالہ مہ کن وچھ!
از چاہنے کل بھانہ وڑھے ملکہ بترتھ چھم

دامہ تر اگر چھکھ تہ بہ سنبھالہ مہ کن وچھ!
دروازہ تھافے وٹھوتہ ترہ پر تھ جاہیہ کرے زول

بوخنیہ جگر ہالہ شمع زالہ مہ کن وچھ!
یود لالہ بکری دوز تہ سنے گیلہ مہ وچھ وچھ

کنہہ وایہ کرن چھمنہ رتھ نالہ مہ کن وچھ!
چھے وکنہ گنڈ رتھ دوز تہ ترہ گوپی چھ غزلخان

نہ نہ ہرنہ کھیل س منرنہ دوتھ رتھالہ مہ کن وچھ!
کم بایہ چھ فاضل ترہ سری کرشنہ نظر تل

اسن تہ تہ اسن بہ ترہ پتھ گالہ مہ کن وچھ!

۱۔ زول = چراغاں ۲۔ بکری دوز = گستاخ۔

य हि न व्यथयन्त्यते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
 ॥ १२॥

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छाधि वंदय जुव
 बादम त् ख'जुर आल' छकय थाल' में कुन बुछ

अज चानि कले ठाम् वछय मलरि वरिथ छम
 दामाह च् अगर् चस्त्र त् बं सम्बाल' में कुन बुछ

दरवाज् थवय व'थ्य त् चै' हर जायि करय जूल
 बो खूनि जिगर हार' शमह जाल' में' कुन बुछ

योद लागि बुकुर्य वोर त् समय गेलि में बुछ-बुछ
 कांह वायि करुन छुमन् रटथ नाल' में कुन बुछ

छय विगनि गंडिथ दर्य त् चै' गूपी छि गजल खां
 जांह हरन् खेलिस मंज न् विचथ छाल' में कुन बुछ

कम मायि छु "फाजिल" त् श्री कृष्ण' नजर तुल
 आसुन त् न आसुन बं चै' पथ गाल', में कुन बुछ



देहिनोऽसिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।

मात्रास्पर्शस्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
 ॥ १३॥
 तथा देहान्तरप्राप्तिर्धर्मस्तत्र न मुह्यति ॥ १४॥

समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५॥

گلا لہ !

گلا لا ! ذرا بیل ! گپا بنی دیوے چھ
جگر جھیل جگر جھیل ! گپا بنی دیوے چھ !

تہ چھ داغ سپنس سبہ دکھ چیم دلس چیم
یہ مشکل تر کر حل ! گپا بنی دیوے چھ !

وہ نرج نار برہمہ ہنس تر لا گتھ قبا چھ
شہج زادرہ ول ! گپا بنی دیوے چھ !

تہ بہہ مسولن منر، تر پاد اسمت کر
گنبر الفنج کل ! گپا بنی دیوے چھ !

گپا لا ! یمن سپنس دیو آخ رو دکھ
تنگلکھ مل تلکھ مل ! گپا بنی دیوے چھ !

तस्मात्परिहार्योऽर्थो न त्वं शोचितुमर्हसि । १६ ।

गुलाला !

गुलाला ! जरा बल, गुपालुन्य द्रूय छय
जिगर छल, जिगर छल, गुपालुन्य द्रूय छय ।

जे छय दाँगे मोनस म्य दुख छुप, दिलस छुम
यि मुशकिल चु कर हल, गुपालुन्य द्रूय छय ।

वोजूँ नारु ब्रहे हिश चु लागिथ कवा छुख,
शिहिज चादराह बल, गुपालुन्य द्रूय छय ।

चु बेह मसवलन मंज, चु हाँदिल समुत कर
गन्तर उत्फतुच कल, गुपालुन्य द्रूय छय ।

गुपाला ! यिमन सोनु द'द्य आख रुदिख,
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालुन्य द्रूय छय ।



अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्योऽर्थो न त्वं शोचितुमर्हसि । १७ ।

तस्मादेवं विदित्वैनं न त्वं शोचितुमर्हसि । १८ ।



۱۔ ٹھنڈی ڈور پیس گور کھیٹھ کرشنہ گپلا
 ۲۔ تس کھرنہ ڈیکس درہ تہ دلس گونہ ملالا
 ۳۔ مائپہ ژبہ موصومہ وونے لفظ مکھن چور
 ۴۔ اچھ بھنہ لگی بایکا اچھکھ حسن مکالا

نوٹ:-

۱۔ ٹھنڈی = مکھن ۲۔ گور = گوری بای ۳۔ درہ کھنڈی = ملالا کرشن ۴۔ چور = چور
 ۵۔ اچھ لگنی = جسم بد لگنی ۶۔ حسن مکال = Beauty Incarnate

۶۹۔ حسن اب عقل کے یوگ کا حال سن بہت اہمیت میں جس جسے کہتوں گے

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥

اَنْدَس پيٹھ تمي لکھ ميه واصل گزشتان
يمن بنز عبادت خلوصک نشان
نه تجاوز طمع بودے نه ترکہ من همی
به تجاوز سو کھس منز تهنه جیم جان
گزشین (گیتا ۲۲)

अंदस प्यठ तिमय लुख में वासिल गझान,
यिमन हुजं इबादत-खलूसुक निशान ।
न थावन तमाह, दुय, न चरब, मनहमी ;
बे थावय सोखस मंज तिहुंद जिस्मुजान ॥

थन्य चूरि यमिल गो रिर ख्ययथ कृष्ण गोपाला,
तम खंचु न ड्यकस द्रुह त दिलस गत्र नु मलाला ।
मातायि चें मोसूम वेनुय लफुजि "मखन चोर",
ग्रछ युष नु लगी बालुका! छुस हुसनि कमाला ।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।

सुकतदुक्ते ।
उमे जहातीह बुद्धियुक्ता ॥४९॥
फलहेतवः ॥
कृपणाः ॥
छन्निभरणशुद्धौ



تھکنہ ثور

گہو، دود تہ گرس کیا نہ تہ اندیشہ کرتھ چوتھ
 بھگوانہ! پھند باگہ بورت شہجارد لکن دوت
 زو منگتہ، جگر منگتہ، تر لکھ منگتہ دل وجان
 ہوسو مہ لکے کیا نہ اسی ثور مکھن کھیوتھ

۱۔ اندیشہ کرتھ = کھڑی کھڑی ۲۔ لکھ = آتما ۳۔ مکھن = تھن

۲۸۔ لگا ہوں سے پہلے نہاں ہوں وجود یہ پھر تیج میں کچھ عیاں ہوں وجود
 ۲۹۔ لگا ہوں سے پہلے نہاں ہوں وجود یہ پھر تیج میں کچھ عیاں ہوں وجود

॥२९॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
आश्चर्यवत्पश्यति

कश्चिदेन-

आश्चर्यवत्पश्यति

तथैव चान्यः ।

माश्चर्यवद्भवति तथैव चान्यः । २८॥

पैरुके योद कर्शने लील गिान लारी
अहंकारुके योहय सीमाब मारी
यि हासिल गोय ते सपदस कीमथागर
योहय गोण सागरन मंज तार तारी

परख योद कृष्ण लीला ज्ञान लारी ;
अहंकारुक योहय सीमाब मारी ।
यि हासिल गोय ते सपदस कीमथागर ;
योहय गोण सागरन मंज तार तारी ॥



ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याजि, ते अंदेश करिय चोय,
भगवान् ! युहुंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत,
जुव मंगतु, जिगर मंगतु, च रुह मंगतु दिलो जान,
मोसूम ! लगय क्याजि असो चूरि मक्खन ख्योय ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।

کران پوز کرشن جی دوستانس
 سدا اکھ فقراہ تے کرشن شاہ
 وفاداری، دیانت، نیک سیرت
 خلوصک شریہ، تہ جذب جاذبیت
 اکتھکن نے مہا بھارت بیتھکن !
 چھ دوشو منر دوان مکتی سہ لوکن
 بحر گوئی تہ عرفانک تھری پی
 ہمشرتس نش ہمشریاس تہ یارس
 مگر وچھنو یمن دوش منر فرق چھا
 تھامن بالکراون پوز محبت
 کرشن جی چھے کران داسن عنایت
 اکتھکن تھنو قتل غارت بیتھکن !
 یچھے بخشاں ست آکاھی چھے بھگون
 تھوں قائم یچی گوہ چھے کرشن جی

کران पूजा कृष्ण जी दोस्तानस ,
 हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस ।
 सुदामा अख फकीराह तय कृष्ण शाह ,
 मगर वुछतव यिमन देल मंज फरक छा ।
 वफाद्वारी, दियानत, नेक सीरत ,
 तमामन बागरावान पोज मुहब्बत ।
 खुलूसुक श्रेह तु जजबुच जाजिबियत,
 कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत ।
 अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बिथिय कुन,
 अकिथ कुन 'थन्य'—कतल, गारत, बियथकुन,
 छु दुहेवन्य मंज दिवान ओदार लूकन,
 यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन ।
 बजर गव ई तु ईफानुक थजर ई ।
 थवान काइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी ।



भगवान्ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की।

कृष्ण



کرشن سدا

کرشن مہراج اکھ بالک اوستھا
میتر اوس بالہ پانک تس سدا

یمن اوس شریلہ منز یارانہ یارز
کران تنھ پیچھ رشک اس پانہ یارز

سدا ما عمر منز بر و نہ کن پکان گے
کرشن اوتار تس پیچھ ایشور دے

سدا ما اکھ گرتستی سادھ بلکل
کرشن اوتار: مہراج مایک کل

کرشن اوتار گو مشہور عالم!
یوان آسو درشنس تس سادھ کم کم!

کرشن سدا قصہ چچہ پند دوستی تہ یاد وادہا ہند اکھ تارہ پختہ یوشون اپنے پانہ

اس ترافض کیا ہے کہ اس پر نظر نہ کرے جو اس کی تکمیل کرے

सुखितः क्षत्रियाः पाषाणं कर्मते बुद्धिमान् ॥

सुदामा



कृष्ण महाराज अख बालक अवस्था
मित्र ओस बालु पानुक तस सुदामा ।

यिमन मोस शुर्यलि मंज यारानु, यारज्,
करान तथ प्यठ रक्षक मोस पानु यारज् ॥

सुदामा वुमरि मंजु ब्रोंह कुन पकान गय
कृष्ण अवतार तस प्यठ ईश्वर दय ।

सुदामा अख ग्रहस्ती साद बिल्कुल,
कृष्ण अवतार महाराज मोलिके कुल ।

कृष्ण अवतार गव मशहूरि भालम,
यिवान आस्य दर्शनस तस साद कमकम।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्राह्यं न करिष्यसि ।

ततः स्वयमेकीदि च हिला पापमवाप्ससि ॥

سُدا ما و دتھ ملاقات گوتھ مہ پیدن !
نصیبس لبکھتہ میانس کرشنہ درشن !



تیار کر سدا من زیمہ سفرچ - ٹلن ستر تحفہ بھٹبہ بیل تلیج
پکان گوتھ کھ کڈان گو بر دتھ پکان گو - کڈان دتھ اُلفیج زنہ ماتھکا گو
کرشن وچھنک تمنا تس دلس پیٹھ
نہ اٹھو شوقس اندر ووت منر لاس پیٹھ
اچانک کرشنہ لاس گو یہ گوشن - سدا ما اندر پیٹھ من چھم مہ پوشن
سدا ما آو دربارس اندر راو - کرشن مہراج یورے انہ تس دراو

لو ایتھ چھ زسدا اس اوس تحفہ بھٹبہ منر سر بیتھ تہ چہ علاقائی زبانی منر سدا مل نان چھ

۳۴ تھے لوگ دیکھیں گے تحقیر کئے، نہ لیں گے ترانام، تو قیر دیکھ گئے

अवाच्यवादांश्च बहुन्वादिष्यन्ति तत्राहिताः । निन्दन्तस्तत्र सामर्थ्यं ततो दुःखतरं तु किम् ॥

॥ महाबाहो भ्राता ॥ ३४ ॥

सुदामा बोध मुलाकात गोंछ में सपहुन ।
 नसीबस लेखतु म्यानिस कृष्ण दशुन ।
 तय्यारी कर सुदामन जेठि सफरुच ,
 तुलुन सूत्य तोफु फुटजा "बेल्य तोमलुच" ।
 पकान गव , थक कडान , गव ब्रोंह पकान गव ,
 कडान वथ उलफतच जांह मा थकान गव ।
 कृष्ण वृछनुक तमन्ना तम दिलस प्यठ ।
 तु अथ्य शोकस अन्दर वीत मेंजिलस प्यठ
 अचानक कृष्ण लालस गव यि गोशन
 सुदामा अज् यियम मन छुम में तोशन ॥
 सुदामा आव दरवारस अन्दर चाव ,
 कण्ण महाराज योरय अननि तस द्राव ।



अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥ भयाद्रणादुपरतं मंसन्ते त्वां महारथाः ।

اون با شان و شوکت پورِ حشمت - پہ چھنا بالہ پانک شربہ تہ اُفت

سدا ماکھو کرشن پانہ تختس

کران ساری رشک تس نیک تختس

پیاری تختس بہتہ اوتار وقتک - پیاری کو چھس سدا ماکھو وقتک

اگس ستر اکھ بہتہ لول باگروان - یہ دلستہ بھی وزیرن ہوش روان

سدا سن بیلا تو ملیج ڈالو کڈ نئو

کرن پیش کرشنہ لالس تس ٹھنی ٹھنی



کرشن لالس موٹھ لکھتہ سادہو آو - کھوان گو تہہ کران انس نہ ٹھرو

مرے کا تو کیا ہے کاجرت میں گھر کے اگر جیت بجائے تو دنیویا ہو کر رہے

کرشن لال نے پرتھوی سوار حال احوال۔ زمین باجین ازلت روپیہ تے مال
 سدا و نہ لوگ بس دو کہن چہم۔ چھ اتھو منزستھ گذران سات کیو دم
 سوخن زیٹھان کے دفتر بڑتھ آئے
 اتھ پتھکن نہ روزان راز سرس



سدا کرشن لال سستو ہم دم
 سدا تہ نہ گربارک پہنے غم
 سکے کافی گڑھاں اتھ کاروبار۔ ہوان روختھ چھ آخر بار بار

वेदवाद्गताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः । ४२ ।

समय काफ़ी गछान ग्रथ कारबारस,
हवान रोखसथ छु आ'खु'र यार यारस ।



नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते

स्वल्पमन्यस्य धर्मस्य त्रायते महती भयात् ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।

کراں روختہ کرشن جی تس فقس۔ سُداس ظن نہ شری آسن بہ بیکس
 پھران کو تہ سدا کرشن لائن۔ سواری پیچہ کھستہ دروازہ گرس کن
 دزل بروہنہ بروہنہ سوئے دف تہ دم دم
 وناں ساری ساری سدا راجہ چھم
 ولتہ نہ رفته سوہری تاج بر سر۔ سدا از شہن ہندشہ برابر
 گرس کہتہ ووت گاس منر سدا
 خبر کیا چیس زر گاس منر سپد کیا
 وچھن گاہی کراں تس پونپری گتہ۔ اُس تعظیم سان ماوان گرج و تہ
 ہنہ بروہنہ کن پکتہ ڈپش عمارت
 عمارت چھا سورگ چھا باغ جنت
 خبر لُج ورا عیالس تم رستہ ای۔ دوان زن خور و غلمان سوہ گرنری درو
 سدا ماں پانہ حارن خواب دیشان
 یہ سوئے کیا وچھاں چیس چھمنہ زان
 بہ ما چھس روومت بیگانہ گومت۔ بیتہ ڈوکس چھ از پیلین بنیوت
 ۱۔ رستہ بہ جوہر کر تہ۔ ۲۔ سورگ جنت۔ ۳۔ پیلین = شاہی محل۔

۳۔ ہم جوہر کو بتائیں وہ کہ کر ویاں کا پھل مانگا میں زر و عیش کے لئے سوئے

करान रोखसथ कृष्ण जी तस फकीरस
सुदामस जोन जि शुर्य आसन में बेकस ।

फिरान कोताह सुदामा कृष्ण लालुन
सवारी प्यठ खसिथ द्राव अज गरस कुन ।

वजान ब्रोंह ब्रोंह छे सुरनय दफ तु डुम डुम,
वनान सारी सुदामा राजि ह्युव छुम ।

वेलिथ जरबफ त' सोनहर्ष ताज वर सर,
सुदामा अज शहन हुन्द शाह बराबर ।

गुरिस ब्यथ-वोट गामस मंज सुदामा,
खबर क्याह छस जि गामस मंज सपुद क्याह

बुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,
अमिस ताजोमु सान हावान अरुच बथ ।

हना ब्रोंह कुन पकिथ डोशन अमारथ
इमारथ छा! स्वर्ग छा! बागि जनथ ।

खबर लेज वल्य अयालस तिम बसिथ आय,
दवान जन हूरु गिलमान स्वर्ग में अद्राय ।

सुदामा पानु हारान खाब डेशान,
यि सोरुय क्याह बुछान छुस केह नु जानान ।

ब' मा छुस रोवमुत बेगानु गोमुत,
येत्यथ डोकस छु अज पैलस बन्योमुत ।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।

तथापहतचेतसाम् ।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां

॥४३॥

भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।

क्रियाविशेषबहुलां

त्रैगुणविषया

वेदा

निर्देशगुण्यो

भवार्जुन ।

॥४३॥

निर्देशो

नित्यसत्त्वस्थो

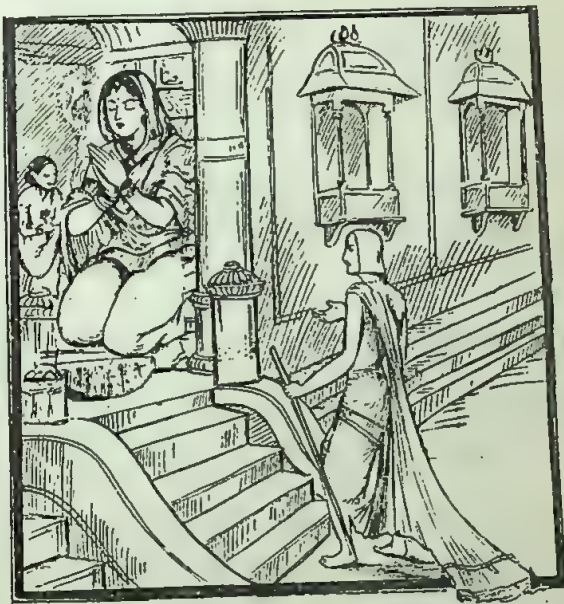
निर्योगक्षेम

आत्मवान् ।

॥४३॥

क्रियाविशेषबहुलां

وچین آستینو بہتہ منر محلہ خاش
کران پوزا، بران لول کرشنہ لاس



سدا چس دپان آخر یہ کمی کو؟۔ یہ کمی پرش میں پڑھنے لولیتھ پوزا
وڑھس آستینو، امی کرشن لول پوزا۔ وندس شری باتھ سالین مول تے موج
عبارت باغ مندر مافرش محسل۔ ٹمی گسہ نہ عینایت یوت جل جل
کرشن یس پچھ کران چھے مہربانی۔ بنان سون میر لون انسان فانی

وہ انسان برہم کا گیتان سے کہہ کر کم کرانوں یہ کب دھیان ہے



کرشن کو دو ن سمت گڑھنک سمندر
اوتھ و اتھ بنان پرتھه قطر ساگر

غریبن، غفلن ہند مال گویاں
 یمن کوچہ شہر تہن ہند لال گویاں
 یمن زخمس اندر پیترن پیوان یچہ
 تہن پرشن سٹھارت نال گویاں

गरीबन, मुफलिसन हुंद माल गुपाल ,
 यि मन को छ हंर तिमन हुंद लाल गुपाल ।
 यिमन ज़नमस सुन्दर प्यतरुन प्यवान यह
 तिमन पुरुषण स्यठा रुत फाल गुपाल ॥



कृष्ण गव दून समुत गछनुक समन्दर
 प्रोतथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।



گلن ہند سمت پھانپھلاوا کرشن جی
 عجب گلستانہ بناواں کرشن جی
 یمن آسہ پتر پچج تہ پتر پچج دلس چھ
 یمن امریت کپالہ چاواں کرشن جی
 کرستانہ پارسی تہ ہندی سیکھ مسلمان
 نظر کنی یمن پیٹھ چھ تر اوں کرشن جی
 دودس شیکرس منز تفاوت پشارہ
 ہشر آدنک چھے رلاواں کرشن جی

علا فوق

समाधावचला बुद्धिस्तथा योगमायाम् ॥

कृष्ण जी

गुलन हुंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी ।

यिमेन आसि प्रेयमुच तु पजरुच दिलस खिह
तिमेन अमरितुक्य प्यालु चावान कृष्ण जी ।

किरस्तान्य, पारस्य त हेन्द्य सिख मुसल्मान
नजर कुन्य यिमेन प्यठ हु त्रावान कृष्ण जी ।

दोदस शेकरस मंजु इशारा तफावत
हिशर आदनुक हुय रलावान कृष्ण जी ।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।

यदा गन्तासि निवेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।

अर्जुन उवाच
स्थितधीः किं प्रमायेत किमासीत ब्रजेत किम् ॥

دُئی ہند نہر، تفریقِ زھیتِ الیش
چھ موہری بجاو تھ مٹوان کِرشن جی



کھن منترِ چھس تہ موہری اثرِ چھس
دلن بیک نہ نہ نہ تم لراوان کِرشن جی
یہ متھرا یہ چمنایہ گنگا یہ رادھا
سمے گو مگر توتہ گاران کِرشن جی
سیہ ہرد والیو تمس نش شوہر لوب
کھوٹس کیمپا چھ بٹوان کِرشن جی
بران لول گوپی تمس شوہر شائے
تمن منترِ چھ دودہ دین گزان کِرشن جی

سہ رگب دودہ نیمہ ستو کھوڈ دھاسون چھ بنان

॥३५॥ श्रीमद्भगवानुवाच ॥

दुई हुंद जहर तफरुकच छोट अलायिश,
छु मुरली बजाविथ मिटावान कृष्ण जी।

कवन मंज बबर कुस तु मुरली असर कुस
रलन यिम नु जाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तंमिस निश शोजर लोब
खोटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तंमिस श्रोचि शाने,
तिमन मंज छु दोह दन गुजारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्यार्थ मनोगतान् ।

आत्मसंयमेवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ दुःखेषु विगतेषु ह ॥

नामिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

بیئیس آسہ وس ز اعجز لولہ ناران ۶
 بلا شکھ تمبس پیر ز ناوان کرشن جی
 لچھس حب و چھس منز چھ تس شولہ ناوان
 بیاباں دس چھے بناوان کرشن جی
 بھو پونپیر ز لگھ کر س سریہ پانس
 تمنن چھے پنن جھلو ناوان کرشن جی



منچ راستی نظر لو ز آئہ ناوان - کرشن جی سدا سدا کرشن جی

॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥

होली

अर्जुन सनार को प्रिय होली गन्धान
फिटरतुक अंग अंग रंगन यंज रंग भरान
कृष्ण ! किछा लकड़ चो आँखें ओलस
साले ने रोखे अंदर मोहली गन्धान

अज हि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान
फिटरतुक अंग अंग रंगन यंज रंग भरान
कृष्ण ! थिरवना लुरव हि आमुत्य वोलसनस,
सारिनय रूहस अन्दर मोहली गन्धान

यमिस आसि वस जाजिमव लोलु नारन
बिलाशक तेमिस परजुनावान कृष्ण जी ।

लछस हुब, वञ्जस मंज छु तस शोलुनावान,
बयावान ज़रस छुय बनावान कृष्ण जी ।

यिमव पोम्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,
तिमन छुय पनुन जलवु हावान कृष्ण जी ।

मनु'व रास्ती नज़रि पौ'ज ओनु'हावान
कृष्ण जी सुदामा, सुदामा कृष्ण जी ।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।

देहिनः निराहारस्य विनिवर्तन्ते विषया प्रतिष्ठिता ॥ इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥



تسند سر پہ پیش، وڑو دین، ماو حشین تا
 ژھنہا چھا تمین یم چھ پالان کرشن جی
 حسد خون مار، ششمہ ہوت نار ژاپان
 چھ زنگت زگت و ذریہ پیارن کرشن جی
 یمن تاپہ کرلو چھ میتر شور کر مٹر
 تمین سیکھ لین پیچھ چھ بارن کرشن جی
 چھیل تھ زھن یمو کام، کرود، موہ، اہنگار
 پو مٹر تمین جان جانان کرشن جی

ایشوت ۲۔ ٹرکھ ۳۔ طمع ۴۔ غور ۵۔ سر پہ پیار

۱۔ جو اس اپنے دل اور لگا مجھ میں دل، تو سرشار ہو لوگ میں مقفل

॥ अथाजगत्तुल्यं कामः कामात्क्रोधाऽपि जायते ॥

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।

सङ्गस्तेषूपजायते ।

विषयान्पुंसः

ध्यायतो

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

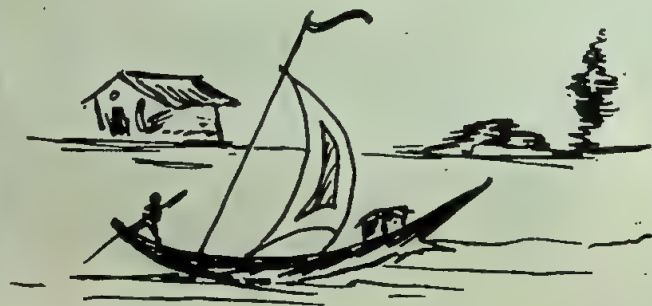
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

तसुन्द स्रेह पशन, बुडबुन्यन, वहशियन ताम,
छयनह छा तिमन यिम छु पालान कृष्ण जी ।

हसद खूखार, खशम होत, नार चापान
छु जगतुक जगत वोन्य चे प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे मेच शोरु करमुच
तिमन सैकिल्यन प्यउ छु बारान कृष्ण जी ।

छेलिय छुन यिमव काम, क्रुध, मोह अहंकार,
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी ।



तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।

स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥



یمن کنبہ نہ آسان یمین دل پریشان یہ تمن بیکسں ہند چھ سامان کرشن جی

یہ ٹھنوی ہو مجسم چھ حنک جالک
چھ فاضل دلس منز بساواں کرشن جی



جو کرتا ہے محسوس دنیا کی سیر نہ الفت کسی سے ہے جس کو نہ سیر

नाति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कृतः सुखम् ॥

چھ برہمن دھرم - گیان ضبط راستی
 لبس - حق شناسی تہ پاکیزگی
 تغول ترک - عیش و عشرت حرام
 طمع ترک نہ تھاؤ فی چیلنی من ہی
 کرشن (گیتا ۱۲)

छु ब्राह्मण धर्म—ज्ञान जब-त रास्ती,
 नवन्य हक शनासी तु पाकीजुगी
 तगोफुल तरक माश ब अशरत हराम,
 तमाह, चख न पावन्य छलन्य मनहमी
 (गीता)

यिमेन काँह नु आसान, यिमेन दिल परेशान,
 तिमेन बेकसन हुँद छु सामान कृष्ण जी।
 यि थन्य ह्योव मुजसुम छु हुसनुक जमालुक
 छु फाजिल दिलस मंजु वसावोन कृष्ण जी।

हानिरस्यायजायते । हानिः खानां सर्वदः प्रसादे । ६४ । आत्मदामधिगच्छति । ६४ ।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।



باسری ہست ساز گو میانہ کن
 چھس اوے کنی کرشنہ شبد کن تھون
 کرشنہ شبدو بخشتم گنگاہ جل
 تھمہ زھم اتھ منر کوڑم شود تن بدن



نوٹ :- ایشبد = لفظ ۲۔ بخشتم = دینا ۳۔ جل = آب ۴۔ پونی ۵۔ شود = مخلص

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।

यस्या जाग्रति भूतानि सा निशा स्वयतो हनेः ॥



सुदामपर कृपा

मे बाँनी करे करिशन सदा । त्रिजगत्स अन्तर बुडिबिबिता
बनान च्यायित्हे दयालु यार सारस । च्छे करिशन दोस्ती अमृत सरापा ।

मिहरबानी करुण कृष्णन, सुदामा !
च छुस जगतस अन्दर बेड नेक बहता
बनान छा युध दयालु यार यारस
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा ।

बाँमुरी हुन्द साज गव म्यानन कनन
छुस प्रवय किन्य कृष्ण शब्दन कन बदन ।
कृष्ण शब्दव बखशुहम गंगायि जस,
बाह छुमिन अथ मंज कोरुम रोद तन बदन

तस्माद्यस्य महाबाहो निगूहीतानि सर्वशः । तदस्य हरिप्रज्ञां वायुनोवाग्निवायुभ्रमसि ॥ ६७ ॥

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधायते ।



بالہ پانس لگو تھے اندھ میوں آے
 زوؤ وندے! امور لی تلا اندھ کرشنہ والے

چاہے حُسنک پیر توہ دیدن کُشش
 چون پیکرِ جذبہ: پیرِ سمجھ پر سہ کراے

چاندِ حُسنِ چاندِ عظمت چاندِ کُتھ۔ کہنہ نہ ہمیں منز رہے ہوئی سانی رے

عظمت = بجز
 کُتھ = وقت

मोरलीदर

बाल पानस लंग्यतनय अज् म्योन आय,
ज्व वन्दय ! मोरलो तला अज् कृष्ण वाय ।

चानि हुसनुक परतवा दीदन कंशिश
चोन पयकर जज्व प्रेयमुच सिपि काय ॥

चान्य हशमत, चान्य अज्मथ, चान्य छव,
कांह न समयस मंज जे ह्युव यो सान्य राय ।



(१) आय--वाँसि हुंद वल, (२) परतव--जलव,
दीद - अछ,

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं

समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।

सर्वं प्रविशन्ति सर्वं तद्वत्कामा

स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥

چاندہ مودلی ہنر دے! اوتار تھے
داس پیاراں چھی تہ از کا سکھ انیالے

اکھ دمہ چشمِ اندر کرشم قرار !
عمرِ لوسم تریو وچھان کر میون پائے

پائے چار

تہ چھہم پریمک صنم، روٹک ہرش
سارنے لول باکر اُون چون دے

دے مشور

یوت تہور سوندہ بناوتھ چون مودکھ
حارتن گو پاند کار پگر خود دے

ساسہ بدی رنگ بدلوئی روم زخم
یس زوس منتر چھاکھ بلسٹھ سے اکھ ہولے

چاندہ پترنج چھہم منس لچتر مہ چھم
لولہ برتو! فاضلس چھے چارو مے

لے پریم

کساوین ادھائے

شری جگوان نے فرمایا

ایسن ارجن! اسان چھہ پائے ہوئے نامری ذات میں لو لکائے ہوئے

चानि मोरली हुंज द्रुय अवतार चुय,
दास प्रारान छी चु अज कामुख अन्याय ॥

अख दमाह चश्मन अन्दर करतम करार,
उमरु लोसम जेय बुछान कर म्योन पाय ।

चुय छुहम प्रेयमुक सनम, रुहुक हर्ष,
सारिनय लोल बांगरावुन चोन दाय ॥

यूत चोर सोन्दर बनाविथ चोन मोख,
हारतन गव पानु कारीगर खोदाय ।

मासुवद्य रंग बदलवुन्य रुदिम जन्म,
यस जुवस मंज छुख बेसिथ मुय अख 'बेवाय ॥

चानि प्रेयमुच छिह्य मनस लेजमुच मे छम,
लोलु बेत्यो । 'फाजिलस' छय च्यान्य माय ।

(१) आय-बौंसि हुंद वख, (२) परतव-जलव,
दोद-अछ,

(१) पाय-चार, (२) हर्ष-सरूर,
(३) दाय-मशवर, मोख-बुध, (५) माय-प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।

असंशयं समग्रं मां यथा ह्यासि तच्छृणु ॥ १ ॥ वक्ष्याम्यशेषतः । सविज्ञानमिदं ज्ञानं तेऽहं

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चित् तसि द्वये । यत्तामापि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥

یکدلی



یکدلی ہندو شہ ایوان چھے بانسری
 یس کنن گو ورنہ لوگ جے جے ہری
 من پو پتر یس سپد یس سے چھ شاہ
 کیاہ مسلماننی کر یس کیاہ کافر

۱۵۔ لاکھ سورج کی تابش مرا اور ہے ہاں جس کے جلووں سے ہر جگہ سے۔ ہر جگہ سے چاند

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकमनास्थितः ।
 सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ ३१ ॥

کُنْیَ یَسْ نَظَرَتْس چھ گِیَانِ وَاَن!
 تَمِیس نِش نِ چَندالِ بَرَمَن زُجَان ॥
 دُوبِی ہُنْد سِٹھاہ دُورِ یَحْسَاس تْس ॥
 سُر گاو، ہون تے ہوس چھ یکسان وِندَان

(گیتا جی १/۵)

گیتا १/۵

कुनी यस नजर तस छि ज्ञानी बनान
 तमिस निश न चंडाल, बाह्यण ज जान।
 दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस,
 सु गाव, हन, तय होस छु इखसान व्यंदान
 (गीता)

यकविलो हुंद शह ग्यवान छय बांसुरी
 यस कनन गव बननि लोग “जयजय हरी”।
 मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,
 क्या मुसलमानी करघस क्या का'फिरी ॥

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।

यस्यन्दमसि यच्चाग्रौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।



بالہ پانس لاگئے جمائے چھتی
کرشنہ لالو! بس بیٹی سمکھتی

پانہ از گنگا پہ ہند جل باگرو
چاو تکھ اُمرت مہ ہوی تریشے ہتی

یم نشا طس، شالما رس پوس پھلو
ژاری ژاری تم لاگئے کاسے ہتی

जीवन्मूर्ति महाबाहो यदेव धाम ते जगत् ॥५॥

وَجُودُکِ سِرِّ مَنُوحِ رُوشَنِ سَبِيلِ بَنِ
ذِرَا ظَاهِرِ مُشْرِ - اُنْدَرِی دِلْسِ سَنِ
کَرَنِ اَسُورِ پَنِنِ اَسَنِ نَه اَسَنِ
دِرِیچِ حَرِکَتِ بِنَاوُنِ کَرِشَنِ سَمَرَنِ

वजूदुक सिर, मनुच रोशन सबील बन
जरा जाहिर मशर, मन्दरी दिलस सन ।
करुण आबुर पनुन आसुन न आसुन
दिलचि हरकथ वनावुन कृष्ण स्मरण ॥



कृष्ण लालो

बालू पानस लागहय जामय छेती,
कृष्ण लालो बस येती ममखक तंती ।

पानू अजु गंगाधि हुंद जल बागराव,
चावनख अमृथ म्य हिव्य त्रेजे हैती ॥

यिम निशातस शालमारस पोश फोल्य,
चार्य चार्य तिम लागहय कारे पंती ।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।

अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय । अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥६॥

لوہے آگر سر پہ موکھ چھئے آنہ پوٹ
 ہیر لون پانس پرون ہندی گہ دھئی
 خور ہند پیکرتہ تھنی ہوا چھئے شرپہ
 نالہ رٹھتھ اکھ دہہ روز تم اتی
 چون آکار چھم ستن برتن بہ اش
 یم شعور کر بر دوئے ٹھوئے دھئی
 دل چھ بھر سٹ تے کرو دھ اندر سمیک سبھاو
 بیر اکھ اکر سٹھوان سمیک متی
 چھی فدا پادن گہتو پمپوشہ سر
 کھیل چھ آسن بہتھ بہتھ آسے کتی
 اکھ بنو موہری دُرَن آدیش لیز
 فاضلہ! رت دوپ چھ داسن ہندی پتی

ہیر لون پانس پرون ہندی گہ دھئی
 خور ہند پیکرتہ تھنی ہوا چھئے شرپہ
 نالہ رٹھتھ اکھ دہہ روز تم اتی
 چون آکار چھم ستن برتن بہ اش
 یم شعور کر بر دوئے ٹھوئے دھئی
 دل چھ بھر سٹ تے کرو دھ اندر سمیک سبھاو
 بیر اکھ اکر سٹھوان سمیک متی
 چھی فدا پادن گہتو پمپوشہ سر
 کھیل چھ آسن بہتھ بہتھ آسے کتی
 اکھ بنو موہری دُرَن آدیش لیز
 فاضلہ! رت دوپ چھ داسن ہندی پتی

पुण्या गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसी । जीवनं सवभूतसु तपश्चास्म तपास्त्वसु ॥९॥

“अख बनिव” मूरली दखन आदेश पोज,
फाजिला ! सत दोष छु दासन हन्द पंती ॥

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥ रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभासि शशिसूर्ययोः ।

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।



گنگا پید پید

رادھا و نان چھ ناتھس۔ دود بانجھ پوڑ پیکر
 درشن مہ کا لد کھنا! چھ چانہ دود رک ش
 اچھ میانہ لوسہ وانس۔ گنگا پید پید پیران
 موہر لی شبد گڑھان چھ۔ گوشن تریتھ بھٹس تر
 اندی اندی ترہ رقصہ باپتھ۔ گڑھ کھیول انتھ تھو
 ہم چانہ لولہ پیرتھ۔ رنگین پر ترہ زریور

۱۔ دود پر = فراق ۲۔ گوشن = کنن ۳۔ زریور = گہنہ

۱۰۔ سن الجن میں ہوں بیچ ہر ملت کا میں وہ بیچ ہوں جو نہ ہو کا فنا۔

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।

मत् एवेति तान्निद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥

॥ ११ ॥ मत् एवेति तान्निद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥



राधा वनान छें नाथम—दुद, माँछ ह्यु व जे पैकर
दशुन में काल्य दिखना! छुम चानि दूरिहक शर ।

अल ध्यानि लोसु वासन— गंगायि प्यठ जे प्रारान
मुरली शब्द गछन छिम गीशन जुं यथ बंठिस तर.

अन्ध अन्ध जे रकस बापय कम्प मोरुख्योल अनिथ पोव
यिमचानि लोल पूरिय रंगीन पर तु जेवर ॥

॥ ११ ॥ मत् एवेति तान्निद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥

॥ ११ ॥ मत् एवेति तान्निद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥

نے

(نے چھ بہانے "مورلی شہزادہ اسہ گوکن وین چھ رادھا کرشنہ ہے آوہ")

کس نام وایان ! لکھ چھ دیان نے چھ دزان نے
گوپالہ تریہیم ویدی چھ دیان
نے چھ بہانے نے چھ بہانے

تصویر آتش خانہ مجاز س چھ دیان ڈول
منز ناہ برہمن طور سنگر
تو دزان نے نے چھ بہانے

نے نغمہ شیرینی - من چھ برہمان - زوچھ زوان کل
یتھ نغمہ پران ہمعرقک
سریہ چھ بران نے نے چھ بہانے

کنوں کے ہوتے وصف تینوں عیان ہوتے جن کے لئے لکراہ اس چھ بہانے

मासे ये प्रयन्ते मायामेवां तरन्ति ते । १४ ।

(नय छ बहानय)

“मुरली बब्दा गव असि कनन
वनन छि राधाकृष्ण है आव”



कुस ताम वायान! लुख छि दपान नय छि वजानय,
गूपाल जे यिम बेद्य छि दपान,
नय छि बहानय—नय छि बहानय

तसवीर मातशखान मजाजस छु दिवान डोल
मंज नारु ब्रहेन तूर संगुर
तोति दजान नय—नय छि बहानय

नय नगम् शीरीनमन छु ब्रमान, जुव छु जुवान कल
युथ नगम् प्रावुन मायफतुक
श्रेह छे बरान नय—नय छि बहानय ।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।

दुरत्यया ।

माया मम

गुणमयी

होषा

दुर्वी

परमव्ययम् १३

मांमेभ्यः

नाभिजानाति

मांमेभ्यः

نتیجہ گیان حاصل پید، تھو کہ زانی اندر من علم
 سوہ زان ناوتھ ام تہ کنے
 ہو چھ پزان نے نے چھ بہانے

زن سوز و نس زونگ چھ نگان، لام لکن لام جنگس
 من وہنہ نگان تاوہتین
 شولہ نرٹان نے نے چھ بہانے

ون سور گڑھتھ روزہ ہٹا، تروہ بہتھ لوب
 تھو پانہ تھلان والہ توے
 اسہ گران نے نے چھ بہانے

فاضل! شریک ساز کنے، سوز مگر بیون
 گو پالہ! یوہے لولہ ہتین
 منز چھ سزان نے نے چھ بہانے



من از جن ہین میرے بہرستار چار طلب کار میرے منہلو کار سیت

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।

आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥

तुथ ज्ञान हासिल सपदि बवख जून्त्य अन्दर मन
सुय ज्ञान हाविथ मोइम तु कुनुय
'ह' छे परान नय—नय छे बहानय ।

जन् सोजवनस जोगे छु लगान लाम लूकन लाम
मन वुहनि लगान ताव हत्यन
शोलु छटान नय—नय छि बहानय ।

बन सूर गच्छित रोजि हेटा चूरि बिहिथ लेब
तथ्य पानु थलान वालि तवय
भासि मरान नय—नय छि बहानय ।

'फाजिल' शरीरक सोज कुनुय सोज मगर व्योन
गोपालु! योहय लोलु हत्यन
मज छे सज्ञान नय—नय छे बहानय ।

नोट— ग्यान—ज्ञानकारी, प्रकन
ह—ईश्वर, मल्लाह ।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।

प्रियो हि ज्ञानि नोऽन्यथा हं स मे प्रियः १७ ।
एकभक्तिविशिष्यते ।
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थं ज्ञानी च भरतपुत्र १६ ।



مہ چھا انکارا ماتا! کیا نہ پترہ صہتم

مہ لے گوی گاؤ ماتا سستی ہر دم

دو پتھ دودھ ماسہ چوتھم تروڑ ٹوک

ہتے پونڈ پونڈ تے ملے تے تہ ٹوک

دودھ دکاڑو چیتھ تہ روزم کل مہ اتھکن

یوہے گوٹھانہ ووتھ بھگوانہ سند دین

بنیاتہ اوتار چیتھ اپرہ سکان ویتھ تمہن ہنن کتھ تہ کامین منز چہ شوزہ آسان

यो यो यं यं तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥



पौंज अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याजि प्रलुथम
मैं लय गोय गांव मातायि सूत्य हरदम ।

दोपुथ दुद मा सां चोथम जूरि चूरे
हतय पौंज बोजतय मलरे तू टूरे ।

दुदुक्क नंटय चय ति रुजुम कल म्य अथ कुन
योहय गव ठानु बोथ भगवानु सुन्द द्युन ।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः । १९। प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।

तं तं नियममाख्याय प्रकृत्या नियताः खया ॥

نیز گو سر پہ چھا پوشیدہ روزان
کرشن پوز و نہ چھا نہ نہہ کانسہ کھوڑان

بھج پندرج نہ روزان و انسہ پابند
لوکٹ بالک آئی کوڑمٹ غفلت مند



یہ دھرتی گاؤ ماتا پیڑھ چھ توشان
دوان دھد تھنی کرشن آخر بناوان
کھیوان تھنی امرت کنٹ داسہ چاوان
اُمس بگ الیشور پدوی چھ دیاوان

پرستش وہ ذوق یقیں سے کرے جسے دیوتا مان لے گمان کے

देवान्देवयज्ञो यानि भद्राणी यानि मामि ॥



पजर गव सिरियि छा पूशीद् रोजान
कृष्ण पौंज वननु छा जांह कोसि खोचान ?

नेहज पजरच न रोजान वांसि पावंद
लुकुट बालुक प्रेमो कोरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,
दिवान दुद, थन्य, कृष्ण प्राखुर बनावान ।

हृदवान थन्य अमृतक्य नटथ दाम् चावान
प्रमिस जग ईश्वर पदवी छु आवान ।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

लभते च ततः कामान्मार्गैर्विहितानि तां ॥ अन्तर्बु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

स तथा श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।



कृष्ण अख बालुका पञ्चक मुजस्सम
फुरुर जगतस योहय अवतार आदम ।

कृष्ण वुतराच प्यठ सुलहुच करामत,
योहय अख पौशिवन्ध अमनुच अनामत ।

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज सु इलहाम,
यम्पुक अख अख सदा लूकन छु पैगाम ।

कृष्ण गव जुलमु अयवानन सु डगराय
यम्पुक दंसलावु अपजिस तालि तंच् काय ।

कृष्ण गव मकसदुक नज दीक मंजिल
अमिस निश सारिनुय हासिल कुनुय दिला ।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।

मूर्धेऽयं नाभिजानादिलोको मामजमव्ययम् २५ वेदाहं सप्ततीतानि वर्तमानानि चाजुन ।

इच्छाद्रूपसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भावत । सर्वानि संमोहं सर्वेयानि परंतप ॥२७॥

کرشن گو دُون سَمَتِ گَرْهَنکِ سَمندر
 اوتھہ و اُتھہ بَنانِ پُرتھہ قَطَرِ ساگر
 کرشن گو یکدلی ہند اکھ سہ اگر
 وِزانِ پتھہ لُش چھ مدھہ موتِ تال تے سُر
 کرشن گپتایہ ہند گہتے مَنجِ اش
 گنن تارِ پلین منزِ سرِ پُراگاش
 کرشن گو اکھ پوسترِ روپِ پُریمک
 تھوڑِ دلِ پسند سوندِ شریک
 کرشن گو زلزلہ کرودس تہ کاس
 سہ خالص سون کران کم مایہ تر کاس
 کرشن ہر دج چھ پز آئینہ داری
 اینکارِ س بِنادِوانِ اِنکساری

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
 प्रयाणकरूपेण च मां ते विदुर्नृकवेत्तसः । ३० ।

कृष्ण गव दुन समुत गछनुक समन्दर
 आतिथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर
 वुजान यथ निश छु मदमोत ताल तय सुर ।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आश
 गटन तारीकियन मंजु सिरियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक
 तस्सव्वुर दिलरुवा सोंदर शरीरुक ।

कृष्ण गव जलजला क्रूधस तु कामस
 सु खालिस सुन करान कम मायि त्रामस ।

कृष्ण हृदयिच छु पंजु आईनु दोरी
 अहंकारस बनावान इन्कसारी ।

ते ब्रह्म तद्विदुः केवलमप्यगमं कम चाखिलम् ॥
 ये ।
 मामाश्रित्य यतन्ति
 जराभरणमोक्षाय
 ॥ इदमवाः ॥
 भजन्ते मां ददमवाः ॥
 ते ब्रह्ममोक्षनिश्चिन्ता

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।

کرشن گو تھن، دو دچ مائے شہل سرہ
مونس، لو بس کنی برہہ، ز الو فی رہہ

کرشن گو پوشون گنگاپہ ہند جل
چھلان ہندس، مسلمانس دلک مل

کرشن گو فکر تارن و انسہ ہند ویر
سہ چھا اگسند، سہ گو پرتھ کانسہ ہند ویر

کرشن گو استما ست استما بس
تمس سوئے چھ حاصل دے یہ گویس

۱۔ مائے محبت ۲۔ برہہ = شولہ (شعلہ) ۳۔ موہ = ہوئے میوئے

بھہ۔ طمع۔ ۵۔ ویر۔ جاداد ۶۔ ست۔ دایمی پندر۔ ۷۔ دے۔ مہرمان
شری بھگوان کا ارشاد دسواں ادھائے

۱۔ سمجھنا۔ ۲۔ بھگوان پھر یوں کہوئے۔ کہ اس کے قوی دست پیارے کرے۔

अहमतिहि देवानां महर्षीणां च सर्वथा ॥२॥

कृष्ण गव थन्य दुदच मालय सहल रोह
मुहस लबस फुनी ब्रह जालवन्य रोह ।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द जल
छलान हे'दिस मुसलमानस दिलुक मल ।

कृष्ण गव फिकिरि तारुन बांसिहंद व्युच
सु छा भव्यसुंद ? सु गव प्रथकांसि हंद व्युच ।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा वस ।
तमिस सोरुय छु हासिल देययि गव यस ।

مہاساگر کہ شبنمِ دل بناوان
تجھے قسِ منزِ گوناگوں در دانیہ نہ عیاران
تلاشِ کو مرتبہ گیسائی نہ پھو منزل
شعورِ رس - لاشعورِ رس تم بساوان

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।
 तिमय तस मंजु ग्वनुक्य दुरदानु क्कारान ॥
 तलाशिय मरनु ज्ञानुक्य नीठ्य मंजिला
 शऊरुक्य ला शऊरुक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले,

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।



نئے موری

ہے! نے چھ گڑھان شولہ وِمان، نار ہسے نار
 رہتہ زینونین کرشنہ زبہ کن
 لارہسے لار

لاہوتہ پیٹھ تڑچھ کران کنور گنگس طور
 آکاشہ پیٹھک سریرہ زبہ نش
 جادہسے جاد

دل پانہ برمان۔ کیاہ چھ دُئی۔ کتھ چھ وِمان پیر
 یم چانہ نہج پکوتہ سپد
 یارہسے یار

لاہوتہ پیٹھ تڑچھ کران کنور گنگس طور
 آکاشہ پیٹھک سریرہ زبہ نش
 جادہسے جاد

نئے موری
 رہتہ زینونین کرشنہ زبہ کن
 لارہسے لار

لاہوتہ پیٹھ تڑچھ کران کنور گنگس طور
 آکاشہ پیٹھک سریرہ زبہ نش
 جادہسے جاد

نئے موری
 رہتہ زینونین کرشنہ زبہ کن
 لارہسے لار

महर्षयः सप्त पूव चत्वारो मनवस्तथा । मद्रावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥



नय छे गछान

हे नय छे गछान. शोलु बुहान, नार हसा नार !
 रेह चैनवन्यन कृष्ण चैकुन
 लार हसा लार !

लाहूतु प्यठु'च जुच छे करान कुनिरु' कँगस तूर,
 आकाशि प्यठुक सिरियि ते निश
 जार हसा जार !

नोट:-

१ लाहूत-तस्सवुफक थोद मुकाम २ कोहि तूर ।

दिल पानुब्रमान क्या छे दुई कथ छि वनान वैर
 यिम चानि नैहजे पकय त सपुद्य
 यार हसा यार !

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।

यशोऽयशः
 दानं
 तुष्टिस्तपो
 समता
 अहिंसा
 च ॥४॥
 सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥

گویا ! یثرب کا کہ آہ پلس آہ کر کہ آہ
 اکہ تہ تہ دوس ہو کر لگان
 دار ہنسہ دار

۱۔
 زم چاہنے کے چھو تہ چٹیکہ و پتھ تہ سپدی و پتھ
 ۲۔ دریا
 تم قلزم من تری تار مو شکھ
 تار ہنسہ تار

دھن مار لو کہ : کینہہ مگر من چھ گنجک نیاس
 یس مار تہ پتھ ، قس نہ گنج
 مار ہنسہ مار

۲۔
 مار تھ تہ زیو انم ، کر شہنہ لو بم من مہ سرفراہ
 ۲۔ بہن
 اتھ پریمہ پتھ پیٹھ مہ گندم
 زار ہنسہ زار



یہ جو قوت مرگے لوگ کی جان کے حقیقت مظاہر کی پہچان کے لیے ہے

لچھ وانسہ گڑھتھ کرشننہ ترمایکھ تہ مہکھ دل
 اتھ زئمہ پھر س ترمیہ چھ لگان
 پیالہ ہنسہ پیار

کلاؤ ہنہ وٹھ تہ گے پھر تہ مہ کن نین ! نین اچھ
 یو دتیر نظر دکھ تہ دپے
 مارہ ہنسہ مار

کرشنا ! مہ دیتھم سوزنتے نے مہ دلس زدی
 چھس دوشن شہن پٹھ پٹھ ونگ توکھ
 دارہ ہنسہ دارہ

موہ لی چھ ند - ماتھو لے - شہ چھ امیک زو -
 روح بالہ کرشن فاضلنیم
 شادہ ہنسہ شادہ !

مورلی تہ مورلی دل

کُرتِ شہِ مورلی پسِ کُرتِ سوز و گداز
 دلِ ربا، دلکش، مودرتے دلنواز
 لے اچھ عرفاں تہ شہِ قدسی صفا
 پانہ مورلی دل چھ سرتا پانچ ساز

میشرونے

میشرونے پڑانہ سمیچ پانسری زان
 بہانہ! گوڑھ و چھن نے کس چھ وایان
 شریک سوز لافانی شہس تا
 شہک سا لک کُرتن آقاں انسان

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।

भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पति ॥१५॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैकरे सोजो गुदाज,
दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज ।
लय अमिच इरफान तु शह कुदसी सिफात
पान मोरलीदर छु सर ता पा मजाज ॥

नोट :-

- १ पैकर—कालब, जिसम=मुज्जसम
२ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन बोल
३ मोरलीदर—मरली बोल, कृष्ण जी ।

मैत्रिव नय

मैचिव नय प्राणि वक्तृच बाँसुरी ज्ञान
बहानय, गोष्ठि वृष्टुन, नय कुस छु वायान
शरीरक सोज लाफानी शहस ताम
शुहुक मोलिक कृष्ण अवतार इन्सान ॥

नोट:-

- ## १. नय—मोरली

असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥३॥

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिनरिदस्तथा ।



کرشن بانسری چیتھ بُرتھ سیجر زن اٹھ
 یہ مُستی تہ فرہٹھ چھ زن بوزونی چیتھ
 یہ سنگیت چیتھ آئے کرشنا
 یہ مہرلی نمودر مائے کرشنا
 نرنگتس یہ نئے وائے
 اُپرشنا کرشنا!

विस्तरेणात्मनो योगं विभृतिं च जनादन ।

भुयः कथय तस्मिन् क्षुब्धतो नास्ति मेऽमुतम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

نہ شوقِ سانِ رُمسِ اگر کہشِ کر کہ
 تر کہ تر مرنہ بر و نہ توے نُسہ تر نہ مرنہ
 چھ نہ پھر لگاں تمین مُشد کہ شاں یمن
 تر کہ تر بوسِ رُمسِ اگر کہشِ کر کہ

चंशोकं सान रुमस रुमस अगर कृष्ण गरख
 मरख चं मरन ब्रोहं-तवय नसां चं ज्ञां ह मरख
 छिजनमं फिर्य लगान तिमन यं शिद गह्वान यियन
 तरख चं नवसरस अगर कृष्ण कृष्ण करख।

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ वारिथ सेहर ज़न अथ
 यि मस्ती त् फरहथ श्रि ज़न बोज़वुन्य चथ
 यि संगीत चथ आय कृष्णा !
 यि मोरली मोदर माय कृष्णा !
 च ज़गतस यि नय वाय , कृष्णा कृष्णा !

याभिर्विभूतिमिलोकानिभास्त्वं व्याप्य तिष्ठसि शुद्धकथं विद्यामहं योगिस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

یہ لے زن منس نادر دزان زن ترندن دار
 کران رُح چھ بیدار یہ یس لوگ سہ مشیار
 تمس کینہ نہ پدرواے کرشنا!
 یہ موہلی کرشم کرلے کرشنا!
 منس کینہ نہ پدرواے
 کرشنا کرشنا



یہ لے بوزنگ ہمیس دوان الیشور یس
 سہ یوگس اندر مس کران ششجہاس
 تمس نش پڈر درے کرشنا!
 یہ موہلی چھ بڈشائے کرشنا!
 ہسچ وٹھ چھ سڈن ترے
 کرشنا کرشنا



मरीचिर्मरुतामसि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

। अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥

यि लय ज़न मनस नार दज़ान ज़न चंदन दार
करान दिल छु बेदार यि यस लोग सु हुशियार

तमिस कैंह नु परवाय कृष्णा !
यि मोरली ग्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कैंह नु परवाय, कृष्णा कृष्णा !

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस
तमिस निश रुचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली ह्ये ^{बड} शाय कृष्णा !
ह्यसच वथ ह्ये स्थज त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥

پہ لے پھر گوشن تہ لُج لام پوشن
 چھ بلبُل تہ گوشن حقیقت چھ گوشن
 یہ سورلی چھ بے ڈھاکرشنا
 یہ سورلی چھ یکتاے کرشنا
 یہ بے رنگ بے ڈھاکرشنا
 کرشنا کرشنا

دھرم، کرے تہ انسان سپٹھاہ تو سپٹھاہ جان
 یہ ساری چھ مانان چھ منزل سہ بھگوان
 چھ گپتا تہ ہمارے کرشنا
 یہ سورلی اترہ پوزاے کرشنا
 سنے سور ہمارے
 کرشنا کرشنا

प्राथसां च मुखं मां विद्धि पार्थिवहस्यतिम् ।
वसन्तां पार्वकश्चासि मेकः शिवविनिमहम् ॥

यि लय फीर गोशन तु लज लाम पोशन
छि बुलबुल ति तीशन हकीकत छे रोशन
यि मोरली छे बे छाय कृष्णा !
यि मोरली छे यकताय कृष्णा !
यि बे रंग बे छाय कृष्णा !

नोट : १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुत
करन वाजन ३ बेरंग—बे इमतियाज



धर्म, कय तु इन्सान स्यठा रत्य, स्यठा जान
यि सोरी छि मानान छु मंजिल सु भगवान
छे गोता ति हमराय कृष्णा !
यि मोरलीं जे पोज, आय कृष्णा !
समय सोर हमराय कृष्णा कृष्णा !

इन्द्रियाणां मनश्चासि भूतानामसि चेतना ॥ रुद्राणां शंकरश्चासि विनेशो यक्षरक्षसाम् ।

वेदानां सामवेदोऽसि देवानामसि वासवः ।

نئے لے چھ یکسان کئی ہندو مسلمان
 چھ رحمان بھگوان چھ بھگوان رحمان
 دُپٹی ہنر نہ کہہ رے کرشنا!
 یہ موہ لی چھ بے نیاے کرشنا!
 چھ یکسان بے نیاے
 کرشنا کرشنا

حفاظت پشن ہنر چھ وہ مُرسلن ہنر
 گے مو سملن ہنر گے عیسمن ہنر
 گپا لاثہ تھرباے کرشنا!
 یہ موہ لی دیچ جاے کرشنا!
 تہ نہ نشیم سمتھ آے
 کرشنا کرشنا

॥ : लुकि छुकि कलिनां : हरेकः : लुकि छुकि ॥

नये लय छै यकसान कुनो हेन्च मुसलमान
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान ।
दुई हंज नु कांह राय कृष्णा !
यि मुरली छै बे न्याय कृष्णा !
छु यकसान बे न्याय कृष्णा कृष्णा !

नोट:- १ दुई - बैर २ बेन्याय - न्याय रोस



हिफा जत पशन हंज छै वथ मोरसलन हंज
गहे मूसहन हंज गहे ईसहन हंज
गुपाला छै थंज जाय कृष्णा !
जे निश समिथ यिम आय, कृष्णा कृष्णा !

नोट :- पुश - हयवान, २ मारसल - दरजम मंज
प'गमबरस लसिथ

उन्वैः श्रवसमश्चानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्यावराणां हिमालयः ॥
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।

تَر چُکھ تھنُ، تَر چُکھ تھنُ، تَر چُکھ ماچھ پو، تھنُ
 یہ تھنُ سورگہ کمر اُڑی نقش اتھ چھ بنی بنی
 چھ کیو پڈ تہ سیرسے کرشنا!
 یہ مہرلی چھ سیرسے کرشنا!
 حُسن تَر دُبرے
 کرشنا کرشنا

کرشن جی اُربہ چھ جے کُنہ رُشہ، کُنہ پے
 کُنہ نئے، کُنہ لے یتھی وہ تیرھانے
 پکے گوہن تَرہ نش دُبرے کرشنا
 یہ مہرلی! تَرہ نش زے کرشنا
 تَرہ جے جے! تَرہ لوگ آے
 کرشنا کرشنا



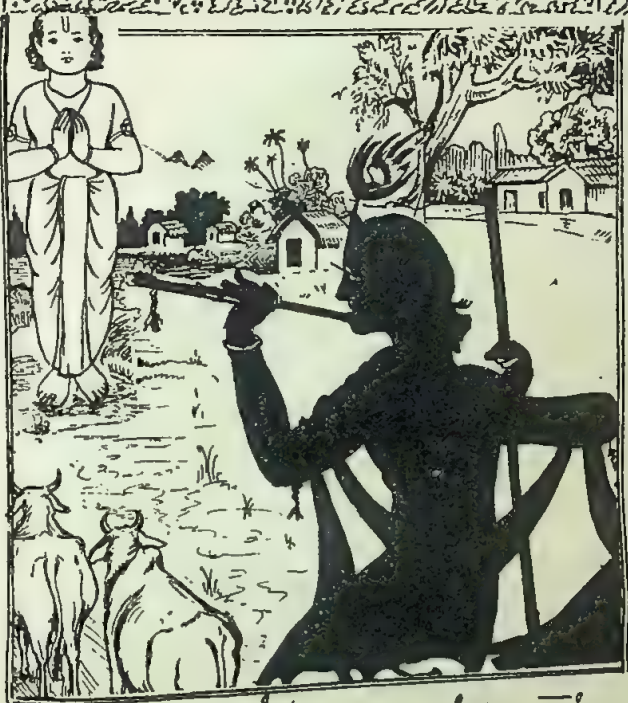
चु छुल यन्य, चु छुल यन्य, चु छुल माछ हा व यन्य
 यि यन्य मुरगु कम्य अन्य, नकुश ग्रथ छि बन्य बन्य,
 छु क्यूपिडे ति सिरसाय कृष्णा !
 यि मुरली छि सुसराय कृष्णा !
 हसोनन चु दुबराय, कृष्णा कृष्णा !

कृष्ण जी जे छु जय, कुनुय सह कुनुय पय,
 कुनी नय, कुनी लय, यिथी विहय यछान दय,
 यिमब गुन जे निश द्राय कृष्णा !
 यि मुरली ! जे यज जाय कृष्णा !
 जे जय जय, जे जेग प्राय कृष्णा कृष्णा !

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।

धृतं छलयतामसि तेजस्तेजस्विनामहम् । जयोऽसि व्यवसायोऽसि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥

मासानां मासोपनिषोऽहमन्ता कुसुमाकरः । १३५ ॥ श्रीवर्चस्व नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा । बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् । कीर्तिः श्रीवर्चस्व नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा । बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।



گلن ہند ترنم، تھرین ہند تھلم
چھ موہلی موڈر موٹھ گفٹار گفٹار
وزن شبنم، جلت رنگ تار کن ہند

یہ موہلی سراپا چھ سیتا سیتا
دلچ پوشوئی لے منچ زندہ سوار
پس منز چھ پوشیدہ اسرار اسرار

میں برشتوں میں ہوں واسد لوک امیر قبیلے میں پایا دوئے کے ارچن امیر

ब्रह्मापि सर्वभूतानां बीजं तद्ब्रह्मर्जुन ।

न ब्रह्म विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥



गुलन हुंद तरंनुम थरथन हुंद तक्कलुम,
छे मुरली मुदुर म्थूठ गुफ्तार गुफ्तार ।

बजुन शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार ।

दिलुच पोशु वन्य लय मनुच जिन्दु आवाज़
यिमन मंजु छि पूशीदु असरार असरार ।

ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याजि चि अंदेश करिथ चोथ,
भगवान् । यहुंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत ।
जुव मंगतु जिगर मंगतु, च रुह मंगतु दिलो जान,
मोसुम् । लगय क्याजि असो जूरि मक्खन ख्योथ ॥

मूनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ दण्डो दमयतामसि नीतिरसि जिगीषताम् ।

वृष्णीनां वासुदेवोऽसि पाण्डवानां धनंजयः ।



بالہ کرشنن یا م دژنم آگہی
 پاد گو ہر دس مہ ذوق بندگی
 بانسری ہندشہ چھ پریمک اتما
 بانسری ہنرنے چھ ساز دہری
 بوزوڑی دوپ نے خودی ہند روپ لنگ
 اتھ خودی پٹھ چھ فلچھ بے خودی
 وچھ امی موملی حقیقتز واش کوڈ
 کور امی ظاہر نہ آوار گو نبی
 یکدلی منز کر و بیان سو رخ دسفید
 فاضلا! مومرلی پنن رنگ قودرتی

बाँसुरी

बालकृष्णन याम दिचनम आगंही'
पादु' गव हवयस' म्य जौके' बंदगी ।

बाँसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा
बाँसुरी हुंज लय छै साजे दिलबरी ।

बोजबुन्य दो'प नय "खोदी" हुंद रूप रंग
अथ खोदी प्यठ छय फिदा लछ "बेखोदी"

बुछ अमो मोरली हकीकच वाश कोड
कोर अमो जाहिर जि अवतार गव नबी,

यकदिली' मंज कर व्यपान सुरखो सफेद
"फाजिला" मोरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, ह्यस 2. दिलस, 3. शोक
4. हिशर

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।

अथवा बहुनैतेन कि ज्ञातेन तवार्जुन । विष्टभ्याहमिदं कन्तमेकांशेन स्थितो जगत् ॥

वा । श्रीमदूर्जितमेव यद्यदिभूतिमत्सत्त्वं एष तुद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥

तत्तद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥



بے خبر باٹھو کر شہ لالہ گورنس
مرتبش منتر ہیر ہوڑ کھورنس
اتھ اندر میانین اتھن منراوس کیاہ
واو مالین منتر بہ سودر تورتس

شعورس لا شعورس منز کرشن آم
وچیم زن سیریه، لیکن رنگ سیا قام
سے یا منہ درشنکے بر وقت چھ تراوان
وچھان تس گوپین سےو الی شور تام

گیا۔ جب عرفان باری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لئے ہر طرف ایک ہی پیر مانتا ہے۔

एवमेतद्व्याख्या त्वमात्मानं परमेश्वर



वेखबर पा'ठ्य कृष्ण लालन गोरनस,
मरतवस मजे हेरि ह्यो'र 'हयो'र खोरनस ।
अथ अन्दर म्यान्यन अथन मंज प्रोस क्याह ।
वावु हात्यन मंज 'ब' सो'दरस तोरनस ।

शऊरस लाशऊरस मंज कृष्ण ग्राम,
वृक्षम जन सिरियि लेकिन रंगु सियाह फाम।
सु यामथ दर्शनक्य वर वंध्य छु त्रावान,
वृक्षान तस गुपियन सत्य ईश्वर ताम।

अर्जुन उवाच ॥

मदन्नप्रदाय परमं गुणमध्यात्मसंज्ञितम्

॥ १ ॥ वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ १ ॥ हि भूतानां भवाप्यथो विस्तरशो मया



سن بنے کیا

دلن گو دین و دھرمک سہرو کم
چھ اوگون پھانچھلاوان ابن آدم
تہہیکھ اوتار ست یوگ پھر واپس
اوتے کنی پیارنچ کل آتہ ہتر چھم

۱۔ اوگون = بدھت ۲۔ ابن آدم = انسان ۳۔ اوتار یون = پتہ یون

संजय उवाच

सही वध रठ ! कृष्ण छुय सूत्य पानस
सुमीलिय पजर्रकिस जरस जुरातस ।
जहानस सोरि सथ याम तार लबनुच,
नजातचि रज करिय लाग्यस किनारस ।

दिलन गव दीन धर्मुक आविह कम,
छु अवगोन फाफुलावान इब्नि आदम ।
चु ह्यख अवतार सतयोग फेरि वापस,
अवय किन्य प्रारुनच कल आशिहचछम ॥

अवगोण—बदसिफत, :- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार
याने सहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरुर

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः

पार्वराष्ट्राणो हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



یا تمہ یہ آدم دین و دھرمک پڑا یہ سمسار
 گیتا چھ شاہد کرشنہ گوپال سپد نمودار
 تس سپد بے دینن ادھر من تے بچھن ستر جنک
 میٹر خاک سپدن چھیکر س ظالم تہ خطا کار

गान्धीनं संसारे हस्तान्तराय परितोषते

गीता

کرشن جی ار جنس اسرار باوان
تمن ہند اینہ گیتا گاشراوان
سلوک نابد تہ الہامی شبد کند
پرن والیس چھ امریت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्जुनस असरार बावान,
तिमन हंदु आनु गीता गाशरावान ।
श्लोक नाबद तु इलहामी शब्द कंद,
परन वालिस छि अमृत दाम् चावान ॥

यामत यि आदम धर्मबुद्धीनुक प्राटि यि संसार,
गीता छि शाहिद, कृष्ण गुपाल सपदि नमूदार ।
तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,
मेच खाक सपदन छेकरस बेदीन तु खताकार ।

सीदन्ति मम मात्राणि मुखं च परिश्रुयति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

न च शक्रीम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥



یام دھرتی پیٹھ سید مندیانہ عام
 تر گہرندی پاھو نثر نہ فلو کور و تسمام
 سنت نمودار گو است کو فو گو
 کور بری کرشتن صبحی سمیک نظام

ہماری ادھر فوج ہے بے شمار کمان دار بھیشم سنا علی وقار



याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु ग्राम,
 चक्रि हिदु पाठय नचनि लेग्य कोरव तमाम।
 सत नमूदार गव असय काफूर गव,
 कोर श्रीकृष्णन सही समयुक निजाम ॥



چھ جھگوں ناسہ تر اسن بیج گالان ۔ دغا بازن چھ موتک پیالہ چاوان
 گٹن منتر بیچا لو ان جیون اڈھ من
 سہ دین دار: حق پرستن تار تاران

छ भगवान नासुत्रासन बेख गलान ।
 दगाबाजन छ मोतुक प्यालु चावान ॥
 घटन मन्त्र फाटवान जीवन अध्रमन ।
 सुदीन्दार: हक परस्तन तारुतारान ॥



ستمگار و ستم کور یا دیپاس
 مہا بھارت پھر ن رو دی پرتھو ناس
 تلونیر لچ علم یوز روز قاسم
 سبق دیت کر شہن اوتارن جہانس

सितम गारव सितम कौर पाव्य पनस ।
 महाभारत फिर न रूद प्रथ जमानस ॥
 तुलिव पजरुच्य अलम, पो'ज् रोजि कोइम
 सबख घुत्ता कृष्ण अवतारन जहानस ॥

کرشن کہانی

راجہ درلودھن کی گفتگو

اگر سین اور دیوگ دو بھائی تھے۔ اگر سین منہ پر کے راجہ تھے۔ دیوگ ایک کینا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناٹے دیوگ کی کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوگ بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شور سین کے بیٹے واسد پو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوگ کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اُس نے دیوگ کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہو گا۔ جب کنس نے ایسا سنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سنا۔ اچانک بھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غصہ آیا اور قصد کیا کہ دیوگ کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے پہلے ہی اُس کی ماں دیوگ کو موت کے آٹاروں میں کاٹ دیا اُس کے بطن میں سر جائے۔ وقت آنے پر کنس دیوگ کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے ملواری

پہلا ادھیائے۔ دھرت راتھ نے کہا۔

ایک کرو بھیت کی دھرم جھومسی یہ جب کے پانڈووں سے مرے لال

॥२॥ श्रीकृष्णकृत ॥ श्री कृष्णकृत ॥ श्री कृष्णकृत ॥

लेखक

मानस-किंकर कोशलकिशोर दास

उग्रसेन और देवक दो माई थे । उग्रसेन मथुरा के राजा थे । उनका पुत्र कंस था । देवकी देवक की कन्या थी । छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था । देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया । कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया । जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा । जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा । तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहाँ से होगा । ऐसा सोच कर

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

संजय उवाच ॥१॥ पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।

परशुतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ॥ व्यूढां दुर्योधनस्तदा ।



کرشن مہاراج کی ماما جی کو
بھائی کنس قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مَر جائے۔ وقت آنے پر کنسنے
دلوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار میاں سے نکالی۔
جیسے ہی وہ اُسے مارنے لگا تو کنسنے ^{واسیدلو} اُس کا ماتھ پکڑا اور پر اٹھنا
کی کہ دلوکی عورت ہے۔ صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور
شادی شدہ ہے۔ اس لئے آپ اس کو نہ ماریں۔ اس کے جو بیٹے
ہوں گے ہم انہیں آپ کے حوالے کریں گے۔

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् । काशिराजश्च वीर्यवान् ।

कंस ने देवकी के केश पकड़ कर उसको मारने के लिए तनवार म्यान से निकाली । जैसे ही मारने को तैयार हुआ, वसुदेव ने कंस का हाथ पकड़ कर कंस से प्रार्थना की कि यह स्त्री है, प्रबला है, आपकी बहिन है, फिर नवविवाहिता है अतः आप इसको न मारें । इसके जो पुत्र होंगे उन्हें हम आपको सौंप देंगे । जब देवकी के



कंस बड़ा पापी था । उसकी

दुष्टताकी सीमा नहीं थी । वह भोजवंशका कलङ्क ही था । आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया ।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।

युयुधानो विराटश्च दुपदश्च महारथः ॥४॥ युष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् । सौमद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥५॥

کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے اُن سے مندرجی کے گھر گوکل منیچا کے لئے کہا۔ وہاں
 اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسد یو کے ہاتھوں
 سے تھکدیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پر داروں
 پر گہری نیند غالب آگئی۔ واسد یو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



کرشن جی نے اہل خاندان کو سب کے سب ارجن اور بھیم میں وقت جنگ

को नींद आ गई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहाँ पहुँचा दो और वहाँ उनके यहाँ कन्या उतराई हुई है उसको यहाँ ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियाँ खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन-फँसकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया



واسد یو جی نے کرشن جی ہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط
 کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پہنچ گیا۔
 اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی
 پانی چڑھ گیا تھا اور دریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے
 عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا بھین بھیل کر بھگوان
 کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ
 لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا
 کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقع فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر
 چوم لئے اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسد یو جی کو پار جانے دیا۔
 واسد یو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اُس
 وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسد یو جی نے کافی
 راز داری کے ساتھ کرشن جی کو سانا جسودا جی کے پاس لے دیا اور
 کنیا کو اٹھا لیا اور متھرا آ کر دیو کی جی کو دے دی جیل خانے میں پہلے
 ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا رونا سن کر تمام پہرے دار جاگ اٹھے غم
 پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔

مہندس کرو صاحب احترام، جہاں کے دو جنموں میں عالی مقام۔

अथ यथा मा विष्णुः सौमित्रो विष्णुः च ॥८॥



अन्ये च बहवः शरा मदर्थे त्यक्तजीविताः । नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥

तब भगवान ने उनका माव समझकर सूत्र से अपना पैर निकाल कर स्पर्श कराया । यमुना जी चरण स्पर्श कर प्रसन्न हो गई और उन्हें मार्ग दे दिया । वसुदेव जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे थे । भवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के पास कृष्ण जी को लिटा दिया । कन्या को उठा लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया । कारागार में पहले की भाँति ताले पड़ गये । कन्या का रुदन सुनकर सब पहरेदार जाग गये । खबर पाते ही कंस वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।

مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی مایا کا وِچار
 آتے ہی جونہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اٹھایا وہ ماتھوں میں سے
 نکل کر فضا میں اڑ گئی اور بولی، ارے راجہ کنس! تو مجھے کیسے مارتا
 تجھے مارنے والا تو گوکل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر
 منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے بائیں ماتھے کا
 کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے
 بہت سے راکھشوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوکل بھیجا، لیکن وہ خود ہی
 موت کا شکار ہو گئے جو بھی جاتا تھا اُس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس
 نے پوتنا کو بلایا۔ اُس نے کہا کہ گوکل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں اُن سب کو
 کھا جاؤں گی۔ یہ سن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں
 زہر بھر کر گوکل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر تندرہ جھون میں آگئی
 اور ایک بہت سُندر گوی کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی
 مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا جسودا جی
 گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو
 بھگوان کے مُمتہ میں ڈالا۔ تب پرتھو نے دودھ کے ساتھ اُس کے

॥१४४॥ शुभं कुरुते : प्रवृत्तं निश्चिन्तयितुं शक्यम् ॥

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली घरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है। कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं। तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का घास बन गए। जा भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया। उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मैं सब को खाजाऊँगी। इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ। पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई। वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं साला की बघाई लेकर आई हूँ तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया। यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुँह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

यथाभागमवस्थिताः सर्वेषु अयनेषु पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीष्माभिरक्षितम् ॥१०॥

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।



پرانوں کو بھی پی لیا
اس طرح شکستہ
بکاسر اور نرکاسر
وغیرہ بے شمار
راکھشوں کا
خاتمہ کر دیا۔
بھگوان کرشن
پہلے ہی کنس
کو بھی مار سکتے
تھے، لیکن ان
راکھشوں کو بھی

بھگوان کرشن پوتنہ کے پران پوس رہے ہیں

مارنا تھا، اس لیے کہ کنس انہیں وہاں بھیجتا تھا اور پرجھوجی انہیں آسانی
اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیسلا میں بھی سیاست کار فرما تھی،
کیونکہ برآج کے علاقہ سے سب ماکھن عاریتاً بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے
جنگ کی سورش

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः । पौण्ड्रं दध्नीं महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥



लिया। इस प्रकार शकटामुर, बकामुर, नरकामुर इत्यादि
 अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान् कंस को भी
 पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी
 मारना था अतः कंस उन्हें वहाँ भेजता और प्रभु खेल २
 में उन्हें मार देते थे। भगवान् की माखन लीला में राज-
 नीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन श्रृण रूप में कंस
 को भेजा जाता था। भगवान् ने

स्थितौ महति सान्दने ततः स्वतेह्यैयुक्ते शब्दस्तुमुलं समवत ॥ सहसैनाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलं समवत ॥

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमखाः ।

سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہئے۔ نیز گویوں کہ
اُن پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی اُن کے گھر نہیں جاتے تھے وہ
رورو کر اُنہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک
کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی مٹکی ٹوڑ
دی۔ جسودا جی نے اُسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو
ٹیرٹھا کر دیا۔ پیل آرجن کا ادھار (خلاصہ) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب ناراجی نے آکر کہا کہ آپ بھگوان کرشن
اور اُن کے بڑے بھائی کو دشمنش بیگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے
پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا
اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکل کو جہنم میں بھیجے
اکرور جی نے سب ماجہ بندج کر سنایا۔ ماما جسودا نے کرشن سے کہا کہ
آج دور کھیلے مت جانا، لیکن پر بھونے سب دوستوں کو ساتھ لیکر
جہنم کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی
تو انہوں نے اسے جہنم میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اُس میں کود پڑے۔
وہاں کالیبا ناگ کو قابو میں لا کر اُس کے بچھن پر نا چنے لگے اور اسی پر

۱۶۔ مہی بہت زیادہ خطرہ وہ کنشی کا لالہ وجے پر دکھاتا تھا ایسا کمال

॥७४॥ : अनामिकाकुलः ॥२४॥ ॥३३॥

बल मिलता है वहाँ नहीं जाना चाहिए । दूसरे गोपियों का उन पर बहुत स्नेह था । जिस दिन कृष्ण जी उन के घर नहीं जाते तो उस दिन वे रो-रो कर पुकारती थी और घाने पर माखन खिलाती । भगवान् प्रत्येक कार्य लीला द्वारा करते थे । एक बार घर में माखन की मटकी फोड़ दी । यशोदा जी ने ऊखल से बाँध दिया भगवान् ने ऊखल को तिरछा करके यमुलाजुन का उद्धार किया । जब कंस को बहुत दिन हो गये तब नारद जी ने आकर कहा कि आप दोनों बालकों को धनुष यज्ञ के बहाने बुलाओ और तीन करोड़ कमल के पुष्प लाने को कहो । कंस ने अक्रूर को दोनों बालकों को लेने के लिए भेजा और आज्ञा दी कि यदि इनने पुष्प नहीं मिलावाये तो सारे गोकुल को यमुना जी में बहा देंगे । अक्रूर जी ने सब समाचार नन्द जी को सुनाया । माता यशोदा ने कृष्ण से कहा आज दूर खेलने मत जाना । लेकिन प्रभु ने सब सखाओं को साथ लेकर यमुना किनारे गेँद का खेल शुरू कर दिया । जब भगवान् के पास गेँद आई तो उन्होंने यमुना में फेंक दी और फिर स्वयं भी उसमें कूद पड़ी । वही कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया

शिवण्डी च महारथः
परमेष्वसः काश्यश्च
॥१६॥
सुधोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥
नकुलः सहदेवश्च

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।



تین کروڑ کنول کے پھول

منگالے! اگر درجی جب

بلارم اور کرشن کو لے جانے

گئے تو تمام برج اُن کی جُدا

میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان

نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی

لوٹ سہیں گے۔

مستہراب پنچکر گویا پڑی نامی ماضی کو نجات دلائی۔ کشتی کھینے کے دور
 بے شمار پہلوؤں کو پھچاڑا۔ اپنی ماما دیو کی جما کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو
 بالوں سے کھینچ کر پکڑ کر اور مار کر اُسے سُکتی بخشی۔ واسد پو اور
 دیو کی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اگر سین کو قید سے نکال کر
 تخت شاہی پر بٹھایا۔ جہاں سندھ اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے
 سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب
 اٹھویں بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دُور کا چلے گئے اور رات بھر
 تمام لوگوں کو دُور کا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر

॥०८॥ : ५२०१६ ४३५६७८९ १०११२

नमश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥ अथ व्यवस्थितान्दष्टा धातेशान्कपिष्वजः

वही कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया और उसी पर तीन करोड़ कमल के पुष्प मंगवाये । भक्त जी बलराम, कृष्ण को ले जाने लगे, तो समस्त ब्रज विरह में रो रहा था तब भगवान ने उनको समझाया कि हम जल्दी आयेंगे । मथुरा पहुँच कुवल्यापीठ हाथी का उद्धार किया । मल्ल युद्ध में अनेक मल्लों को घराशायी किया । अपनी माता देवकी का बदला लेने के लिए ऊपर बँठे कंस को केश पकड़ कर मार कर उसका उद्धार किया । वसुदेव और देवकी को मुक्त किया । कंस के पिता राजा उग्रसेन को कारागार से निकाल कर उन्हें राज सिंहासन पर बिठाया । जरासन्ध अपने दामाद का बदला लेने के लिए सत्रह बार सेना लेकर आया । भगवान ने सबका ही नंहार किया । जब अठारहवीं बार उसने युद्ध किया तो भगवान द्वारिका चले गए और रात भर में सब लोगों को द्वारिका पहुँचा दिया और स्वयं एक पहाड़ी के पीछे से निकल कर कूह पड़े । जरासन्ध ने सोचा इतने

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।

کو دپٹے۔ جبرائیل نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں ہونگے تاہم پہاڑوں کے ارد گرد آگ لگوا دی۔ پھر خوش دلی سے بسو قاف کرنے لگے۔

ادھر جھوماسر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کر کے انہیں حرست میں رکھا ہوا تھا۔ انہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان نے جھوماسر کو قتل کر کے مکتی دلائی۔ پھر ان کے پرار تھنا کرنے پر پتہ پڑا میں تسلیم کیا۔

کوروؤں پانڈوؤں کی سپہ سالاری دشنی تھی۔ پانڈو بھگوان کرشن کے معتقد تھے۔ کوروؤں نے جمے کی چال چل کر پانڈوؤں کو ہرا دیا اور سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔ لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دُشاسن کھینچے کھینچے مار گیا۔ ان کو جنگ بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی زہر دیا۔ لیکن پر جھوماسر طرح سے ان کی حفاظت کرتے رہے۔ ہابھا رت کے جنگ میں ارجن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارجن کو موہ آیا تو اسے گیتا کا اُپدیش دیا۔ جبرائیل کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر

एवमुक्त्वा

इयां केरा

गुडाकरोन

भारत ।

सेनयोरुभयार्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥

॥३३॥ : ॥५५॥५५॥ ५५५५५५ ॥५५५५५५॥

ऊँचे से बचे नहीं होंगे और फिर पहाड़ी के चारों ओर आग लगवा दी, फिर प्रसन्न मन से रहने लगा । उधर भीमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भीमासुर का वध करके उन्हें मुक्त किया । फिर उनके प्रार्थना करने पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया । कौरव और पांडवों की छापस में शत्रुता थी । पांडव भगवान कृष्ण के भक्त थे । कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर इनकी हरा दिया । तथा सब कुछ दाँव पर लगवा दिया । मरी समा में द्रौपदी को नग्न करना चाहा लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बढ़ाया कि स्वयं दुःशासन खींचते-२ हार गया । वन में भेज दिया, कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया । किन्तु प्रभु सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे । महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने । युद्ध में जब अर्जुन का मोह होगया तब उसे गीता का उपदेश दिया । जरासन्ध को भीम के द्वारा मरवा दिया । अन्त में

॥ २२ ॥ गोत्समानान्वेष्टं य एतेऽत्र समागताः ।

यावदेताभिरीक्षेऽहं योद्धुक्कामानवस्थितान् ।

ہرے کرشنا !

کرشنہ ہتو! ہتو! ہتو! ایسی کلین پوشہ لار کر!
 بانسری شہ دتو دتو
 ددو نن شا لمار کر
 باغ نشاط گل پھولن۔ گوپین دل تہ شل برمن
 کرشنہ! داتہ از مرز
 شب منس موختہ مار کر
 چانہ گیشیا مہ ترہایہ نش صبح نگین تہ شرمہ ہوو
 سیرپہ مو کھس نیر کر تھ
 حارتن کر دگار کر
 باغ نپیمہ عطر ترہٹھ۔ سہیہ ہواپہ وار کر ان
 پوشہ پدین ترہہ گتھ کری
 توتہ ہمیس امار کر

پیار وینین میسر کن چانه دیایه کن نظر !
 کشته دیاله یودنه یکھ
 سونتہ بلن ہمسار کہ
 پیچر نہ کر دلبری گلن لیس نہ کر دلبری گھو !
 درشنکو بہ مزہ تمن
 پریمہ ستو دل تیار کہ
 از تہ گنگایہ بھٹی نہ ترھن چانه وومید تار کر
 کل مہ رس رس گنن
 کیاہ یکے رم مہ تار کہ
 تار شکار سول بہ سول ہانہ کھیلن نہ گزند یون
 وہ فی اگر لانکہ پیچہ تر کہ
 میون دل شرمسار کہ
 چانه خیالہ کنی و نم ساسہ بدی دل پسند سوخن
 فاصلن تاز تر منزل
 از بین اشتہار کہ

हरै कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर
 बांसुरी शाह दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर
 बागि निशांत गुल फोलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन
 मेठि, दहान' कर सोखन, शबममस म्वस्त'हार कर
 चानि ग्येशामि छागि तल. सुबहि निगीन ति शामि प्यव
 सियि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर
 बागि नसीम' अ'तरि छठ, आगि बेबागि वर करान
 पोशि पद्यन च्य गथ करिय, तोति ह्म्यस अमार कर
 प्यारवन्यन य'म्बर जलन, चानि पोत छाई कुन नजर
 कृष्णा' दयाल 'यो'द न यिख, सोन्त' बलन ब्यमार कर
 यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव
 दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस वागुजार कर
 अज ति गंगागि ब'छ्य बछन चानि' वो'मेजि तारिक्र'यं
 कल मे' रुमस रुमस गनन, क्याह यिमय रुम मे' तार कर
 तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' स्यलिस न ग्रंद यिवन
 बोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर
 चानि खयाल किन्य वनिम, सासबद्य शार दिलपसन्द
 फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इस्तिहार कर



کمر شبنم چھو کہ تم رنگ تہ بے رنگ پان گوم
 بے رنگی منہ چان پیر نمک رنگ سنیم
 پریمہ رنگ پیر اوتھ گئے رنگ نظر آم
 اتھو رنگس منہ سر یہ پیر اگاش دل بنیم

Krishn Leela

کرشن لیلہ

कृष्ण लीला

ڈاکٹر نظام الدین پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج یونیورسٹی

کشمیر کے رسکھان

فہمیل کاشمیری نے بالک اوستھا اور کرشن لیلہ نامی
کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سوہر داس رسکھان پر مانتا
نروتم داس، رتنا کر، سبہریمینیم بھارتی کی روایت کو قائم
رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یک جہتی کو بڑھاوا دینے میں ہم
انہیں امیر خسرو، ظفر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیگل آتساہی

اور نیرنباری وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے
 سنگورو سری بابا گورو نانک کی بانی کا ترجمہ کر کے ایک عظیم
 کارنامہ انجام دیا ہے۔ جس کی سرانبار کچھ قوم نے کی ہے۔
 فائنل کاشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیل کی
 ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُر خلوص
 ماحول کے تخلیقی کام میں جُٹے ہوئے ہیں۔ اُن کے اشعار میں
 بانسری کے میٹھے سُرخیلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی
 اس سُر کو سنتا ہے ججے جے ہری پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک
 ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اُس میں ہندو مسلمان
 کی تمیز نہیں رہتی۔ فائنل صاحب کمرش جی کو گنگا کا ایسا پاؤں
 (پلو تریانی) تصور کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے
 میل کو دھو ڈالتا ہے۔ کمرش کو پوشہ و ن گنگا یہ ہند جبل
 چھلان ہند بن مسلمانن دلاک مل
 فائنل صاحب کمرش کی بانسری پر مہرت ہیں۔ کیونکہ اس کا
 سر پریم آتما ہے۔ جلوہ روشنی حیات ہے اور سارہ لبری ہے

مری در کمرشن اس میں چھونک مار کر گیان و عرفان کے
 ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے جس سے اطرافِ عالم میں
 کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار البشور
 اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و
 بھگوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضلِ صاب کمرشن کے رنگ و روپ پر مہو بہت ہیں
 انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ چھوکوں میں رنگ و بو کمرشن کی
 بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین
 گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضلِ صاب کی یہ کتاب "کمرشن لیل" بھارتیہ کمرشن کاویہ
 میں ایک گراف قدر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد
 رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

لحم المر

(DR. NIZAM-UD-DIN)

Prof. of Hindi

Islamia College, Srinagar
 (Kashmir)

ترجمہ: پرتھوی ناتھ کول سیال کشمیری

Dr. Jagat Mohani

M. B., B. S.

King Edward Medical College, Lahore (Punjab, Old)

MEDICAL SUPERINTENDENT

RATTAN RANI HOSPITAL 10 A. M.-4 P. M.

GYNAECOLOGIST & OBSTETRICIAN

بھگوان کرشن نے

گیتاجی میں ارشاد فرمایا ہے :-

خاک، پانی، آگ، ہوا، خلا، مَن، ذہانت اور خودی۔
 ان آٹھ متضاد اقسام سے میری پُرکرتی بنی ہے۔ یہ میری
 آدنیہ اوستھ ہے۔ اوستھا کو بھی سمجھنے کی کوشش
 کرو۔ اس کے علاوہ میری اُتم اوستھا سویم ہی میں ہے۔
 جس پر ساری کائنات کا دار و مدار ہے۔ تم اس بات کو
 سمجھ لو کہ تمام جاندار اور بے جان انہیں دوسے بنے ہیں۔
 میں اس بدلتے سنسار کی ابتداء ہوں اور اختتام بھی۔

دکھنا پینہ کے درمیان جو کہ آٹھویں کرشن پاکھش کے
 کالے پندرہ والے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں
 موت کے کالے سائے منڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں
 ممبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچے، کرشن نے جنم لیا۔
 گیتا جی کی بھاشا کی روشنی میں کرشن کے معنی 'کالے' کے ہیں۔
 جس کی مناسبت کرشن پاکھش کے تاریک پندرہ وارے کے ساتھ
 ہے۔ یہ وہ سب سے تنہا جگت کے تمام رہنے والے لوگوں میں
 نا سمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا۔۔۔ اندھکار کے اس
 دور میں کرشن جیسے روشن ضمیر رہنا کے وجود کی اشد ضرورت تھی
 جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کر توت والے
 منشوں کو روشنی بخش کر ملکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتا جی
 کے درس سے برہمانڈ کی اصلیت اور مایا کی ماہیت سے واقف کیا
 بھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود
 جیسے مکھن چوری، کالے پالک، مڑی منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہمارے

کرشن کے مرنے کا منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیارے



بھگوان کرشن جی مرنے بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے
لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سُسنے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔
کرشن جی سیکھو لازم کے اولین پرچارک تھے۔ انہوں نے لوگوں کو
بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زیرِ پلے سانپوں اور



رہنماؤں کو بھی قابو کر لیا اور ان کا سدھار کیا ۔



کرشن جی دھرم کے محافظ سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔
 انہوں نے انسان کو دنیائی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور
 حق پرست تھے۔ وہ پانڈوؤں کے دوست پشت پناہ تھے۔ انہوں نے
 ظلم و تشدد، جلعساری اور دغا بازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے
 اکھاڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کمرشن بھگت ہیں۔ رسالہ
 ”دھرم یگ“ کے تنظیمی ادارہ نے انہیں ”کشمیر کا رسکھان“ کا
 خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کمرشن بھگتی
 کا بھرپور اظہار اپنے شبدوں میں ہمارے سامنے پیش
 کیا ہے۔ انہوں نے کمرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی
 کے سُندر مرقعے سجائے ہیں۔ اُن کی کتاب ”کمرشن لپیلا“
 کی لپیلاؤں میں ترنم، تاثیر اور گداز ہے۔ اُن کے اس
 عظیم کام سے سوشل ازم اور قومی یکت کے میدان
 میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دُعا ہے کہ یسودھاکا بالاک کمرشن جو دبائیں ہاتھ
 میں حلو، دبائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا، نگلے میں زرق برق جواہر
 کا ہار، بشیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو
 ابدی مُسرت عطا کرے!

83-8-30

(ڈاکٹر جگت موہنی)

کشمیری علم و ادب اور قومی یکتا کے کار کو بڑھا دینے کے
 سلسلہ میں فاضل کشمیری نے شری جی صاحب اور
 سلوک مہلہ نواس اور ستھ رنگ کے بعد اس بار اپنی
 کرشن لیلیاؤں کا یہ حسین کلدستہ بالک اوستھا عوام کے
 بہبود کے لئے منظرِ عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے،
 جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے اُمید ہے کہ اس
 دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی فُصحت
 میں دُور رس نیا رُج برآمد ہونگے۔

علی محمد لائبریری
 علی محمد لائبریری

سرنگر کشمیر
 ۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء

PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalnagar, P. O. Natipur
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیداؤں سے سب کو یکساں طور پر
اپنی طرف کشش کی ہے۔ اُن کا بابا کُروپ سُور داس اور رس خان
جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گئے۔ ان دو
شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق وائسلیہ رس یعنی
شفقتِ مادرِی کا جذبہ سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب
کو امربنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کشمیری ایک ایسی
شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں اُن تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو
آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے
ہیں۔ فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذاہب کی بنیادی وحدت کو سمجھ

اپنی سُری زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پیر چادر کرتے ہیں۔ وہ
 پیرم ہنس رام کرشن ہاراج کے سرودھم سمنوے (Harmony of religions)
 کو آج کے دور کے مس ایل کا واحد حل تصور کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی
 مقدس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنتھ صاحب میں ایک ہی
 پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو میں نے دھارمیک محفلوں اپنی کرشن لیلائیں
 سنا تے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے
 ایک پُر کیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست،
 روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجہ
 ہے جسے پڑھنے والے اور سننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی
 سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اس بار فاضل صاحب نے بالک اوسٹھا کی کتابت و تزیین
 اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصہ ہے۔

یحیٰی لال سہرو

25.1.84

25.1.1984

देवी संपदमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
॥२॥ देव्याय नमः ॥२॥

Fazil Kashmiri is,
I have understood, un-
Paralled devotee of Lord
Krishna. Although he is
born muslim, but he is
no longer now muslim
in a strict theological sense,
or Pandit. He is actually
established in that state
of divine devotion of Lord
that has risen in that
state where he has gone
above limitation of
Caste creed and colour.
He is just devotee of Lord
Krishna. I hope this

अध्याय १६

श्रीभगवानुवाच ॥ अमयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरैश्वर्यम् ।

देवी संपदमोक्षाय निबन्धायासुरी मता । भवन्ति संपदं देवीमभिजातस्य भारत ॥३॥

द्वी भूतसर्गा लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
 देवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

॥ मा शुचः संपदं देवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥

book 'Krishen Leela' will illumine the whole world.

I hope that each & every human being should and must own this valuable book, so that they also rise to that state of divine oneness where limitation of cast and creed are not recognised.

6-11-83. Lakshmanjoo
 Gupstagaunga

(श्री आचार्य स्वामी लक्ष्मण जो महाराज - गीत गंगा बरिग)

शेवाचार्या स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

मता । निबन्धयासुरी संपदमोक्षाय देवी संपदमासुरीम् ॥ अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पादुष्यमेव च ।

فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے بانیوں اور پرستاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں جس کے امینہ میں اُن کی انوارِ محمدی شری جب جی صاب اور کرشن لیلہ جیسی گرِ انقدر تصانیف پیش کی جاسکتی ہیں۔

زیرِ نظر اُن کی تصنیف "کرشن لیلہ" اُن کی کرشن بھگتی کی تصویر ہے۔ فاضل مصنف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج پر سندرِ نظمیں لکھی ہیں۔ انہیں سنکر اور پڑھ کر سامعین اور قارئین روحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں، خالصہ درباروں اور دھاتسوؤں میں حاضرین انہیں اپنا کلام سنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور ان کی قدر دانی کرتے ہیں۔ فاضل صاب کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

میلاد امِ پنجون۔۔۔ گوگر باغ

۲۶ فروری ۱۹۸۴ء



Symbol of Better Tomorrow

Save a little for your

FUTURE

in Various Deposit Schemes

of

Jammu & Kashmir Bank

**Tailormade to Suit everybody's
requirements**

**For details please step into
at any nearest Branch/Office
of**

Jammu & Kashmir Bank.

कृष्ण-लीला

Krishna Leela

*This Beautiful Book
of the Personality of*

Krishna

provides the key to how humanity can become united in
peace, prosperity and friendship around a common cause.

Printed at Hind Samachar Printing Press,
Pacca Bagh, Jalandhar City.



